ज्ञानामृत

अप्रैल, 1983 वर्ष 18 ❋ अंक 10 मूल्य 1.25

विशेष लेख : गुटनिरपेक्ष सम्मेलन तथा कार्ल मार्क्स

1

2

1. माननीय भ्राता एल० एफ० एस० बरनहम, ग्याना के राष्ट्रपति, साऊथ एक्सटेंशन संग्रहालय, नई दिल्ली में आते हुए। साथ में हैं ब्र० कु० जगदीश जी तथा ब्र० कु० मोहिनी जी।

2. मद्रास में ब्र० कु० शिव कन्या, ब्र० कु० लक्ष्मी, संयुक्त राष्ट संघ के महासचिव को आबू में हुए विश्व शान्ति महा सम्मेलन की स्मारिका की प्रति भेंट करते हुए।

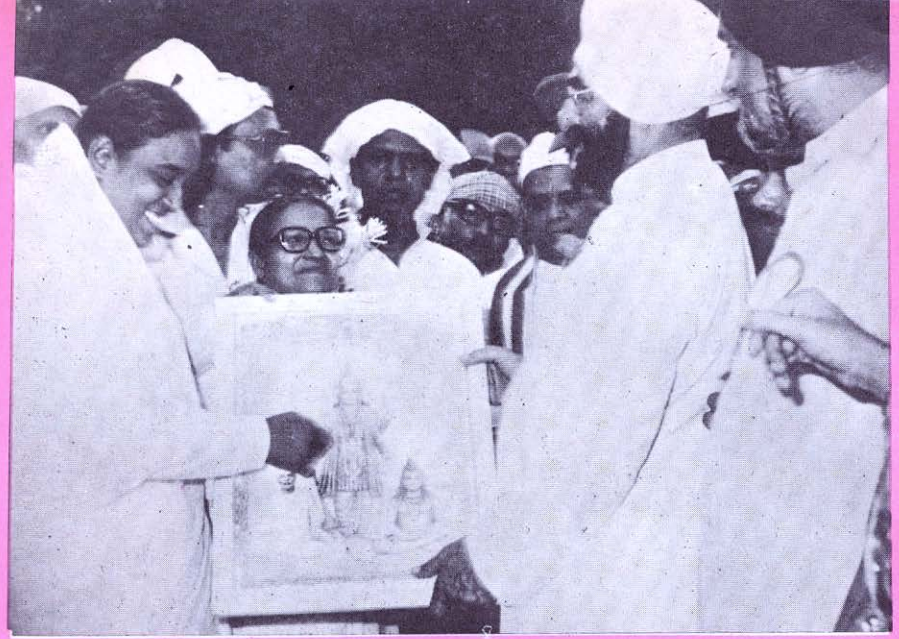

कटक में भारत के राष्ट्रपति, ज्ञानी ज़ैलसिंह को ब्र०कु० कमलेश तथा ब्र० कु० मंजू त्रिमूर्ति का चित्र उपहार में भेंट करते हुए।

नई दिल्ली स्थित साऊथ एकसटैन्शन संग्रहालय में ग्याना के राष्ट्रपति भ्राता बरनहम के लिए दिये गए भोज में संबोधित करती हुई ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी। मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी, मुख्य सम्पादक 'ज्ञानामृत', 'वर्ल्ड रीन्युवल' तथा 'प्यूरिटी', भ्राता बरनहम जी ग्योना के राष्ट्रपति, दादी प्रकाशमणि जी तथा ब्र० कु० मोहिनी जी।

काठमण्डू में ब्र०कु० राज नेपाल के प्रधान मंत्री भ्राता सूर्य वहादर थापा तथा उनकी धर्म पत्नी को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए।

हैद्राबाद में ब्र० कु० कुलदीप तथा अन्य ब्र० कु० भाई, आन्ध्र प्रदेश के मुख्य मन्त्री एन० टी० रामाराव जी को ईश्वरीय साहित्य भेंट करने के पश्चात् उनके साथ खड़े हैं।

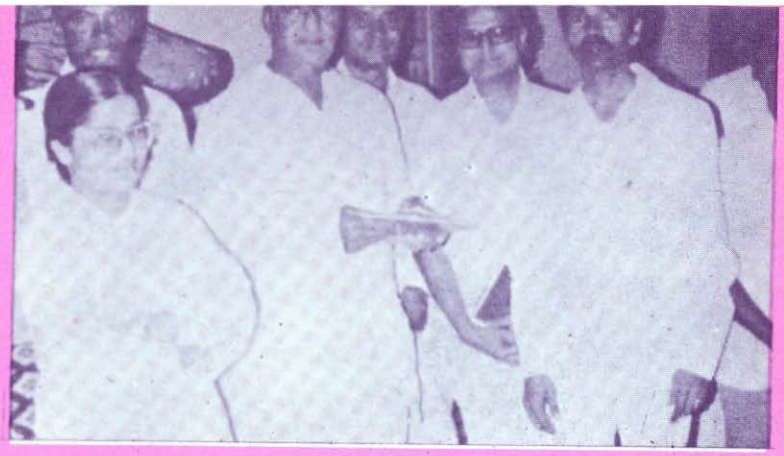

आबू पर्वत पर हुए विश्व शान्ति महा-सम्मेलन के अन्तर्गत न्यायविद सम्मेलन में मंच पर (बाएं से) भ्राता कृष्णा अय्यर जी पूर्व न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय, कीन्या से वकील भ्राता न्यागा जी, ब्र० कु० जय प्रकाश जी तथा देहली के जिला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता आर० एल० गुप्ता जी विराजमान हैं।

भावनगर में नशाबन्दी समिति की ओर से प्राप्त निमन्त्रण पर आयोजित चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता देवजी भाई, मन्त्री समाज कल्याण व हरिजन कल्याण, गुजरात द्वारा सम्पन्न हुआ। साथ में ब्र० कु० दीना तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहिनें उपस्थित हैं।

माऊँट आबू में हुए विश्वशन्ति महा सम्मेलन, में भाग लेने वाले केन्या के प्रतिनिधियों का ग्रुप। ब्र०कु० हसुभाई, ओपियो मेटिवा, इसाई चर्चों के मुख्य, भ्राता, न्यागा, डॉ० कामरा, एन० जी० नजिनी, स्वास्थ्य मंत्री, बहन न्गवीन्या, जिम्बाबे के उपमन्त्री, ब्र० कु० एलीजिबथ, बहन वाकौं, सम्पादक केन्या लिट्रेचर ब्युरियु, श्रीमति जेन नजिनो।

सूरत में आध्यात्मिक संग्रहालय के उद्घाटन अवसर पर ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी प्रवचन करते हुए। उनकी दाई ओर पत्रकार तथा लेखक भगवती कुमार शर्मा, ब्र० कु० माहिनी जी, तथा बाई ओर ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी तथा उपकुलपति भ्राता ए० आर० देसाई जी विराजमान हैं।

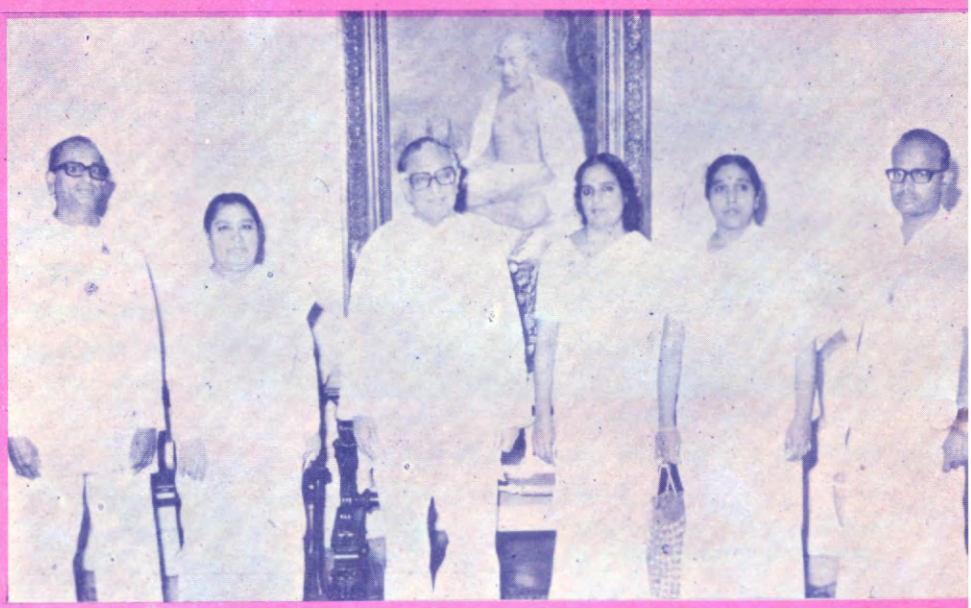

मद्रास में तमिल नाडू के राज्यपाल को विश्वशान्ति उत्सव के लिए निमन्त्रण देने के पश्चात् चित्र में (बाएं से) ब्र० कु० पद्मोनाभन, ब्र०कु० शिवकन्या, राज्यपाल भ्राता एस० एल० खुराना, ब्र० कु० शकुन्तला, ब्र० कु० नागरत्नम तथा ब्र० कु० धन्दापनी खड़े हैं।

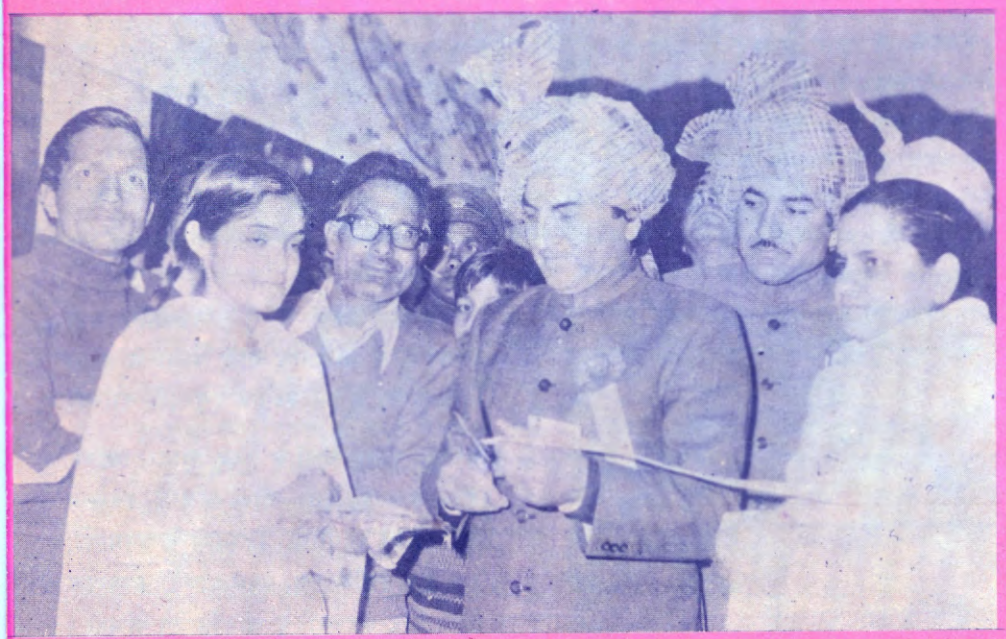

मन्डी (हिमाचल प्रदेश) में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन हिमाचल के मुख्य मन्त्री भ्राता रामलाल टेप काट कर, कर रहे हैं। ब्र० कु० सन्तोष तथा अन्य भाई बहन साथ में हैं।

Regd. N. D (E)-70

अमृत-सूची

क्र० सं०	विषय		पृष्ठ
१.	केवल शिव बाबा ही निर्गुट है	...	१
२.	चर्चा निर्गुट देशों के शिखर सम्मेलन की और कार्ल मार्क्स और उसके साम्यवाद की (सम्पादकीय)	...	२
३.	आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास	...	६
४.	कर्मों का फल किसके नियन्त्रण में ?	...	८
५.	ईश्वरीय आनन्द	...	९
६.	जीवन को शिव पर बलिहार कर दिया	...	१२
७.	सेवा समाचार (चित्रों में)	...	१४
८.	एप्रिल फूल (कविता)	...	१५
९.	खुशियों के रंग भरे (कविता)	...	१५
१०.	रड़क चौथ या अटक चौथ	...	१६
११.	श्रेष्ठ बनो, श्रेष्ठ करो	...	१९
१२.	ड्रामा की ढाल	...	२१
१३.	सच्चा जीवन (कविता)	...	२१
१४.	अनासक्त स्नेह	...	२२
१५.	परमात्मा धर्म-स्थापना का कार्य माताओं द्वारा कराते हैं—क्यों ?	...	२४
१६.	नृत्य नाटक—महाशिवरात्रि	...	२५
१७.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	...	३१

केवल शिव बाबा ही निर्गुट है

ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का वक्तव्य

ब्रह्माकुमारी संस्था तथा गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के लक्ष्य समान ही हैं।

ग्याना के राष्ट्रपति जी का मत

नई दिल्ली स्थित साऊथ एक्सटेन्शन सेवाकेन्द्र पर ग्याना के राष्ट्रपति भ्राता बरनहम तथा अन्य महानुभावों के लिए दिये गये भोज में उपस्थित सर्व का दादी जी ने दिल व जान से स्वागत करते हुए कहा कि ग्याना देश का ब्र० कु० ई० विश्व विद्यालय से काफ़ी समय से सम्बन्ध है। ग्याना के राष्ट्रपति से सम्बोधन करते हुए कहा कि आप नई दिल्ली में गुटनिरपेक्ष सम्मेलन में भाग लेने आए हैं। इस सारे संसार में एक केवल परमात्मा शिव ही सच्चे अर्थों में निर्गुट हैं क्योंकि शिव परमात्मा का किसी के प्रति भेदभाव नहीं, न ही वह हद में आते हैं। हम सब तो बन्धनों में हैं, और कहीं न कहीं किसी न किसी के लगाव में हैं। यदि हमें परमात्मानुभूति हो जावे, वह अनुभव हमें गुटनिरपेक्ष बना देगा। **परमात्मा हम सर्व के पिता हैं, वे रंग, रूप, देश, जाति धर्म की सीमाओं से परे हैं, वे हमें भ्रातृत्व की शिक्षा देते हैं। यही वास्तविकता ही पवित्रता है, सत्यता है। पवित्रता ही एकता और शान्ति की जननी है।** उन्होंने आगे कहा कि आबू में नवनिर्मित "यूनिवर्सल पीस हाल" पर अनुमानित से चौथाई खर्च आया और बहुत थोड़े समय में हाल तैयार हो गया—यह सब प्रेम और एकता का सबूत है। प्रेम, सफलता की कुञ्जी है। ओमशान्ति भवन "हम सब एक बाप के बच्चे हैं" यह आदर्श पेश करता है। दादी जी ने अन्त में कहा **कि हम सब एक पिता की सन्तान हैं—यही प्रेम का सन्देश है।**

ग्याना के राष्ट्रपति भ्राता बरनहम का भाषण

"बहनो और भाइयो, हम पिछले सात दिन से

(शेष पृष्ठ ३० पर)

चर्चा निर्गुट देशों के शिखर सम्मेलन की
और
कार्ल मार्क्स और उसके साम्यवाद की

पिछले दिनों नई देहली में भारत की प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी जी की अध्यक्षता में निर्गुट देशों (Non-aligned Countries) का जो शिखर सम्मेलन (Summit Conference) हुआ, उसके अन्त में सर्व-सम्मति से एक संदेश और घोषणा पत्र प्रसारित किया गया जिन्हें 'नई दिल्ली से संदेश' (New Delhi Message) और 'नई दिल्ली का घोषणा पत्र' (New Delhi Declaration) नाम दिया गया। इस घोषणा पत्र के दो भाग हैं—(१) राजनीतिक और (२) आर्थिक। ये संदेश और घोषणा पत्र, जो १२ मार्च को प्रसारित किये गए, कई कारणों से महत्त्वपूर्ण हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के तत्त्वावधान में इस वर्ष फ़रवरी में विश्व शान्ति महासम्मेलन के अन्त में जो घोषणा पत्र (Ethical Declaration) अथवा चार्टर (Universal Peace charter) अपनाया गया था, उसके परिपेक्ष में नई दिल्ली के घोषणा पत्र, जिसे पहले तो सम्मेलन ने चार्टर नाम देना चाहा था परन्तु बाद में घोषणा पत्र नाम दिया, की हम यहाँ कुछ समालोचना कर रहे हैं।

लड़ाई के बारे में दृष्टिकोण में अन्तर

प्रारम्भ में निर्गुट आन्दोलन की मुख्य अवधारणा तो यह थी कि इस आन्दोलन अथवा दल में शामिल होने वाले देश, रूस या अमरीका—दोनों में से किसी भी गुट के साथ गठ-जोड़ नहीं करेंगे बल्कि वे दोनों के बीच ही का रास्ता अपनायेंगे। परन्तु अब इसके समापन में जो संदेश प्रसारित किया गया है, उसमें इस दल के १०१ देशों ने अर्थात सभी सदस्यों ने विश्व के आणविक अस्त्रधारी देशों से ज़ोरदार शब्दों में यह अपील की है कि वे निरस्त्रीकरण का कार्य शुरू करें। संदेश इस प्रकार है: "मानव समाज के बहुमत का प्रतिनिधित्व करते हुए हम निर्गुट आन्दोलन के देश आणविक संघर्ष की ओर तुरन्त कदम रोकने के लिए आह्वान करते हैं क्योंकि इससे न केवल वर्तमान समय के मानव समाज के हित को बल्कि भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को भी खतरा है। आणविक शक्तियों को विश्व के लोगों की इस आवाज़ को अवश्य सुनना चाहिए। सभी बातों को देखते हुए लगता है कि सन् १९८३ आणविक निःशस्त्रीकरण के लिए एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण वर्ष है। हम आणविक अस्त्रों वाले देशों से आग्रह करते हैं कि वे आणविक लड़ाई की रोकथाम के लिए जल्दी ही कदम उठायें···वे इस बात में अपनी सहमति दें कि वे किसी भी हालत में न इन शस्त्रों का प्रयोग करेंगे और न ही इन्हें प्रयोग करने की धमकी देंगे। यह भी ज़रूरी है कि वे इन अस्त्रों के कम करने के समझौतों को कार्यान्वित करना शुरू कर दें और आगे और कम करने के समझौते करके पूर्ण निःशस्त्रीकरण की ओर बढ़···।"

इस विषय में ध्यान देने के योग्य बात यह है कि पिछले २-३ वर्षों से इन अस्त्रों-शस्त्रों से पैदा हुई भयावह स्थिति की ओर तथा युद्ध में इनके प्रयोग होने पर कल्पनातीत दुष्परिणामों की ओर देशों का ध्यान जाने लगा है। यही कारण है कि गत वर्ष संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा ने भी निःशस्त्रीकरण के विषय पर एक विशेष अधिवेशन किया था और अब निर्गुट देशों के आन्दोलन ने भी अपने राजनीतिक घोषणा पत्र में तथा नई दिल्ली के संदेश में इसे महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है।

मानव समाज के लिए यह दुर्भाग्य की बात है

कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा, उसके स्थापना ही के समय (सन् १९३७) से आणविक युद्ध के बारे में दी गई चेतावनी की ओर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय तो उसके बाद भी हर वर्ष अधिकाधिक उच्च स्वर से इसके बारे में लोगों को पूर्व सूचना देता आया है परन्तु शंकालु लोग इसके बारे में कुछ कदम उठाने की बजाय इसे एक मज़ाक का विषय बनाते रहे और अन्य कुछ लोग यह मानते चले आये हैं कि इन शस्त्रों के कारण से लड़ाई होने की बजाय रुकी रहेगी। इस बीच अस्त्र भंडार आणविक अस्त्रों से भर गए और अब जबकि ५०,००० से भी अधिक आणविक अस्त्र बन गये हैं, तो यह माना जाने लगा है कि विश्व की दो बड़ी ताकतों के बीच यदि लड़ाई छिड़ गई तो मानव सभ्यता का नाश हो जाएगा। इसी बात को सामने रखकर श्रीमति इन्दिरा गांधी ने शिखर सम्मेलन में अपने भाषण में ठीक ही कहा था कि—यदि शान्ति पूर्वक सह-अस्तित्व न हुआ तो अस्तित्व ही नहीं रहेगा (The alternative to peaceful co-existence is the end of existence') नई दिल्ली के शान्ति संदेश में भी पहले ही पैरा में यह कहा गया है कि आणविक अस्त्रों की दौड़ के कारण सारे विश्व को एक महासंकट का खतरा हो गया है।

लड़ाई की होड़ का अर्थव्यवस्था से सम्बन्ध

इससे भी ज़्यादा अथवा ऐसी ही महत्त्वपूर्ण एक बात यह है कि सम्मेलन में निरस्त्रीकरण और विकास' (Disarmament and Development) के विषय पर ऐसा दृष्टिकोण अपनाया है कि जिसकी चिरकाल से आवश्यकता थी। सम्मेलन में वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संकट के मुख्य कारण गिनाते हुए अस्त्रीकरण स्पर्धा अथवा हथियारों के लिए दौड़ (Arms Race) को एक बहुत बड़ा कारण माना है। 'नई दिल्ली संदेश' के परिच्छेद ३ में कहा गया है—"निर्गुट राज्यों अथवा सरकारों के प्रमुख के रूप में हम विश्व की बड़ी ताकतों से यह अनुरोध करते हैं कि वे शस्त्रीकरण की होड़ (Arms race) को बन्द करें क्योंकि इस द्वारा भूमण्डल के अल्प भंडार न केवल बढ़ती गति से खर्च हो रहे हैं और न केवल यहाँ के पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ रहा है और प्रदूषण हो रहा है बल्कि यहाँ की श्रेष्ठतम वैज्ञानिक योग्यताओं को भी निरर्थक और विनाशकारी मुद्दों पर गंवाया जा रहा है। अब इन्हें बचाकर विश्व की आर्थिक व्यवस्था के नव निर्माण और शक्ति वर्द्धन में प्रयोग किया जाना चाहिए और इन्हें विकासशील देशों की उन्नति पर खर्च करना चाहिए।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि निरस्त्रीकरण और विकास के बीच सम्बन्ध को स्वीकारा गया है। ऐसा पहली बार ही हुआ है कि जिसे पहले 'सुरक्षा पर खर्च' माना जाता था, अब उसे 'व्यर्थ खर्च' माना जाने लगा है। अब सुरक्षा के लिए अस्त्र-भंडारों को भरने पर ज़ोर देने की बजाय विश्व के करोड़ों भूखे लोगों को भोजन प्रदान करने पर ज़ोर दिया जा रहा है। अब इस बात का दिनोंदिन अधिकाधिक एहसास हो रहा है कि विश्व में तनाव कम करने और अस्त्रों की दौड़ को रोकने से विकास शील और अविकसित देशों की महत्त्वपूर्ण आवश्यकताएं पूर्ण हो जाएंगी।

वासना-भोग का जन संख्या वृद्धि और आर्थिक संकट से सम्बन्ध

क्या ही अच्छा होता कि इसी प्रकार 'वासना-भोग' और 'जनसंख्या में वृद्धि की समस्या' के बीच जो सम्बन्ध है, उसको भी समझा जाता और निर्गुट देशों के प्रतिनिधि काम विकार—जनसंख्या वृद्धि-आर्थिक संकट, इन तीनों के परस्पर सम्बन्ध को भी जान पाते। और अपने घोषणा पत्र में उन्होंने जैसे भय, संदेह और घणा (Fear, Suspicion and Hate) अथवा क्रोध को अस्त्रीकरण की होड़ का कारण माना है और वातावरण तथा आर्थिक ढांचे का नाशक स्वीकारा है, इसी तरह वे वासना-भोग को भी दावानल की तरह बढ़ती हुई जनसंख्या का

कारण मानते और इसके उन्मूलन के लिए भी अपनी प्रतिज्ञा व्यक्त करते।

नई देहली संदेश का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाग

'नई दिल्ली संदेश' का शायद सबसे महत्त्वपूर्ण भाग संदेश के अन्तिम अनुच्छेद में आया है। उसमें कहा गया है—"यह भूमि सभी की है। हम सभी को सच्चे भ्रातृत्व की भावना और शान्ति से इसके पदार्थों का सेवन करना चाहिए। ऐसा भ्रातृत्व जिसमें हरेक मनुष्य को सम्मान और समता प्राप्त हो।" "(The earth belongs to us all—let us cherish it in peace and through brotherhood based on the dignity and equality of man)" इस सन्दर्भ में यह सोचने की बात है कि विभिन्न देशों के लोगों का 'भ्रातृत्व'—भाई-भाई जैसा सम्बन्ध किस आधार पर टिका है। निश्चय ही इसका एकमात्र उत्तर यह है कि सभी आत्मिक नाते से भाई-भाई हैं, क्योंकि शारीरिक नाते से तो सभी को 'भाई-भाई' कहा ही नहीं जा सकता। अतः भ्रातृत्व के नाते के लिए आत्मा को जानने और अनुभव करने की आवश्यकता है। परन्तु इसके साथ एक प्रश्न यह भी है कि यदि सब परस्पर 'भाई-भाई' हैं तो सभी के पिता अथवा परमपिता कौन हैं? खेद से कहना पड़ता है कि आज इस परमावश्यक तथ्य का ही मानव को परिचय नहीं है। यदि मनुष्य को एक इस बात का ज्ञान हो जाए और वह आत्मिक नाते से भाई-भाई जैसा व्यवहार करने लगे तो विश्व की सहज ही सब समास्याएं हल हो सकती हैं और विश्व सुख और शान्ति का धाम बन सकता है। मुश्किल तो यह है कि आज आत्मा और परमात्मा के परिचय की बात को 'धर्म-चर्चा की संज्ञा देकर टाल दिया जाता है जबकि ये आत्मा और परमात्मा का परिचय भ्रातृत्व की भावना का मूल आधार है और भ्रातृत्व की भावना सभी समस्याओं के हल का मूल आधार है।

'नई दिल्ली संदेश' में और घोषणा पत्र में दक्षिणी अफ्रीका में हो रहे रंग भेद और नस्ल भेद की भी भर्त्सना की गई है और इसे दूर करने के लिए कहा गया है। प्रश्न उठता है कि ये रंग भेद और नस्ल भेद देह ही के रंग एवं नस्ल ही पर तो टिके हैं। यदि हम इन भेदों को दूर करना चाहते हैं तो हमें इसी नाते ही पर तो ज़ोर देना होगा कि हम सब 'देह', नहीं 'आत्मा' हैं।

समस्याओं के समाधान के लिए नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाना परम आवश्यक

अन्यश्च, नई दिल्ली के आर्थिक मसौदे में एक नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था को चालू करने के लिए दृढ़ संकल्प व्यक्त किया गया है। इसमें कहा गया है कि विकासशील एवं अविकसित देशों पर जो ऋण का बोझ है, वह उनके आर्थिक ढाँचे को ध्वस्त करता जा रहा है और कि इसके बारे में विकसित देशों को सहानुभूति का दृष्टिकोण लेना चाहिए और आर्थिक सहयोग देने वाली अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं को चाहिए कि वे अविलम्ब आर्थिक सहायता दें। वरना भूमण्डल के उत्तर और दक्षिण भाग के सभी देशों का आर्थिक ढांचा बुरी तरह से टूट जायेगा। प्रश्न उठता है कि 'सहानुभूति' और 'सहायता' नैतिक गुण ही तो हैं। इस दृष्टिकोण की कामना हम इसलिए ही तो करते हैं कि हम सब परस्पर भाई-भाई हैं और हम सब परस्पर भाई-भाई इस नाते ही में तो हैं कि हम सब आत्माएं हैं और एक परमपिता की सन्तति हैं। इस प्रकार इस विश्लेषण से हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि विश्व की सभी समस्याएं चाहे वह आर्थिक हों, राजनीतिक हों और चाहे सामाजिक, वे केवल आध्यात्मिक अथवा नैतिक मूल्यों ही से हल हो सकती हैं। नई दिल्ली के घोषणा पत्र में भी मूल रूप से इन्हीं का आधार लिया गया है। इन्हीं का आधार लेकर ही ही सूरीनाम, गयाना, निम्बिया इत्यादि सभी देशों की समस्याओं का हल सुझाया गया है जिसका विवरण हम यहां स्थान-अभाव के कारण नहीं दे रहे। परन्तु प्रश्न उठता है कि क्यों न एक बार इन

मूल अथवा आध्यात्मिक नियमों को स्पष्ट कर लिया जाए और अन्तर्राष्ट्रीय तथा वैयक्तिक मामलों में इनके प्रयोग के लिए जनमत अथवा बहुमत को सहमत किया जाए ?

आप देखेंगे कि माऊंट आबू में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा किये गये विश्व-शान्ति सम्मेलन नामक अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन में जो चार्टर अथवा घोषणा पत्र जो सर्व सम्मति से अपनाया गया था उनमें ऐसे ही नैतिक एवं आध्यात्मिक नियमों का उल्लेख था। क्या ही अच्छा हो कि यदि व्यक्ति और राष्ट्र इस चार्टर को अपनायें और उसमें व्यक्त आचार संहिता को कार्यान्वित करें।

चर्चा कार्ल मार्क्स और साम्यवाद की

इस वर्ष १४ मार्च को जहाँ-तहाँ साम्यवाद के प्रणेता, कार्ल मार्क्स की शताब्दी मनाई गई। आज विश्व का लगभग एक तिहाई भाग किसी-न-किसी रूप में साम्यवाद को अपनाये हुए है। जो देश साम्यवादी नहीं हैं, वे भी थोड़ा-बहुत तो उसके विचारों से प्रभावित हुए ही हैं। ऐसा लगता है कि मार्क्स द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों में जो परस्पर असंगतियाँ हैं उनकी ओर चिन्तकों का पूरा ध्यान नहीं गया। उनमें से कुछेक का अत्यन्त संक्षिप्त रूप में हम यहाँ उल्लेख कर रहे हैं। मार्क्स का सारा दर्शन मनुष्य के स्वभाव के बारे में उसकी जो मान्यता है उस पर आधारित है। मार्क्स का विश्वास यह है कि मनुष्य स्वभाव से स्वार्थी और लालची है। उसे धन और सम्पत्ति इकट्ठा करने की लालसा बनी ही रहती है। इस वितृष्णा के वश वह अपराध करने से भी नहीं चूकता। इस मान्यता को लेकर मार्क्स ने मिल मज़दूरों को यह नारा दिया कि वे एक हो जायें और शोषण करने वाले पूंजीपतियों को उखाड़ फेंके। और सारी सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण कर दें। परन्तु यदि इस बात पर विचार किया जाए तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि वास्तव में मानव स्वभाव के बारे में यह मान्यता अधूरे और ग़लत मूल्यांकन पर टिकी है। मार्क्स की कृतियों को पढ़ने से लगता है कि वह और उसका साथी एंगिल्स (Engles) स्वयं मानते हैं कि ऐसे भी मनुष्य हैं जिनमें करुणा, सहानुभूति, सत्य निष्ठा तथा सहयोग की भावना इत्यादि गुण होते हैं। साथ-साथ वे यह भी मानते हैं कि इतिहास पूर्व काल में अथवा आदि युग में लोग मेल-मिलाप और शान्ति से रहते थे, तब न पुलिस थी, न न्यायालय, न कारावास और न झगड़े। परन्तु बाद में जब लोग अपनी-अपनी सम्पत्ति बनाने लगे, तब से शोषण, लट-खसूट और सरमायादारी शुरू हुई।

स्पष्ट है कि मानव स्वभाव के बारे में यद्यपि मार्क्स ने यह माना है कि समय के बीतने के साथ-साथ युग-युग में मनुष्य का स्वभाव बदलता आया है तथापि मनुष्य स्वभाव के मूल्यांकन में उसने इस बात को छोड़ अपना सिद्धान्त गढ़ लिया है और रक्त से रंगी हुई क्रान्ति के लिए मज़दूरों को संघ बनाने की राय दी है जिससे कि संसार में उथल-पुथल मच गयी है और आज संसार पूंजीपति और साम्यवादी – दो परस्पर विरोधी गुटों में बट गया है जिससे कि विश्व के अस्तित्व को भी ख़तरा है।

क्या ही अच्छा होता कि मज़दूरों से हमदर्दी व्यक्त करने के साथ-साथ मार्क्स इस बात को भी स्वीकार करता कि मनुष्य के स्वभाव को सद्गुणों से युक्त बनाया जा सकता है। आज ऐसी ही अहिंसक क्रान्ति प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय कर रहा है। —जगदीश

आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास

ब्र० कु० आत्म प्रकाश, आबू

आओ, हम सब एकान्त में चलकर थोड़ा पीछे चलें और जीवन के उन क्षणों पर पुनः दृष्टिपात करें जब हमें ईश्वरीय ज्ञान मिला और शिवबाबा के मिलन की स्पष्ट अनुभूति हुई थी। उससे पूर्व हमारा जीवन कैसा था, हमारा लक्ष्य क्या था और हमारे विचार क्या थे ? जब हमें प्रथम क्षणों में ये निश्चय हो गया था कि भगवान स्वयं हमसे आ मिला है, उसका सम्पूर्ण सत्य ज्ञान हमें प्राप्त है तो हमारे विचारों और लक्ष्य में क्या मोड़ आ गया था। हमने उन उमंगों में अपनी भावी जीवन की क्या तस्वीर घड़ ली थी।

सभी आत्माओं ने भिन्न-भिन्न कर्म किया होगा। कोई का जीवन अनेक दुनियावी चक्करों के कारण बहुत अशान्त रहा होगा और जब उसे शान्ति का सरल पथ अनुभव हो गया तो उसने सोचा होगा कि बस अब मैं अपने इस सुन्दर जीवन को किसी भी व्यर्थ के चक्कर में नहीं फंसाऊँगा और शान्ति से जीवन का निर्वाह करूँगा। यों ही मैंने अज्ञानवश अपने अमुल्य जीवन को बरबाद किया।

किसी दूसरे के साथ दूसरी घटना रही होगी। कोई कुव्यसनों के कारण धन अभाव में जीवन बिता रहा होगा और इस कारण सदा ही ९९ के चक्कर में परेशान रहता होगा और जब उसे सत्य ज्ञान मिला, उसके विकार छूटने लगे तो उसने दृढ़ निश्चय किया होगा कि ये व्यसन और धन-चक्कर कितना दुखदाई है। अब तो भगवान मिल गया और मुझे अब क्या चाहिए, इसलिए अब मैं सुखद जीवन जीऊँगा और धन-वन कमाने के ज्यादा चक्कर में जीवन की घड़ियाँ बरबाद नहीं करूँगा।

तीसरा कोई प्रभु की खोज में, सत्य ज्ञान की खोज में दर-दर भटकता रहा होगा, शास्त्र पढ़ता रहा होगा परन्तु सन्तुष्ट नहीं हुआ होगा और भगवान द्वारा सत्य ज्ञान पाकर वह आत्मा पूर्ण तृप्त हो गई होगी और तब उसकी उमंगों का ठिकाना नहीं रहा होगा। उसने सोचा होगा कि आह! अबतो मेरी भटकन दूर हो गई, अब मुझे सत्य मिल गया, अब मैं अपनी बुद्धि को कहीं नहीं भटकाऊँगा और इस पढ़ाई द्वारा सबसे आगे जाऊँगा।

चौथा कोई भगवान से मिलने के लिए तड़पता होगा और सोचता होगा अगर मुझे कहीं भगवान मिल जाए तो मैं ये ये करूँगा, उनसे ये ये वरदान मागूँगा—बस सब कुछ छोड़कर उन्हीं के साथ रहूंगा और जब उसे भगवान मिल गया तो उसने अपना सर्वस्व उस पर स्वाह भी कर दिया··· उसके बाद उसे अपार खुशी छा गई···

पाँचवा कोई इस जीवन में एक ऊँच श्रेणी का योगी बनने का स्वप्न देखा करता होगा और उसके लिए अनेक योगियों की शरण में जाता होगा और योग दर्शन का अभ्यास करता होगा—परन्तु योग की कठिन साधना उससे न होती होगी। और जब उसे भगवान ने सरल योग सिखाया तो उसकी उमंगें आसमान छू गई होंगी। सोचा होगा बस अब तो सम्पूर्ण योगी, निरन्तर योगी बन जाऊँगा। अब कोई भी विघ्न मेरे योग मार्ग में विघ्न नहीं बन सकेगा।

इस प्रकार अनेक आत्माओं के अनेक उमंग और अनेक लक्ष्य उस घड़ी रहे होंगे जब उनके जीवन में ईश्वरीय प्राप्ति हुई। उस समय की खुशी, नशा और वैराग्य की स्थिति स्मरण योग्य है। अब समय बीतने लगा। किसी की खुशी बढ़ी, योग बढ़ा, उमंगें बढ़ीं और कोई के स्वप्न धूमिल होने लगे। कोई अपने लक्ष्य को बार-बार याद करने लगे कि हम यहाँ क्यों आये हैं ? हम यहाँ सम्पूर्ण पावन बनने आये हैं, हम यहाँ योग द्वारा ईश्वरीय सुख लेने आये हैं, हम यहाँ ईश्वरीय खजानों से झोली भरने आये हैं, हम यहाँ सर्वश्रेष्ठ भाग्य बनाने आये हैं, हम यहाँ सम्पूर्ण सुख-शान्तिमय जीवन के लिए आये हैं···

किसी को उनका ये लक्ष्य बार-बार स्मृति में रहता है और वे अपने को किसी भी चक्कर में नहीं फँसने देते, अपने संकल्प व समय को सफल करते

हैं। कोई भी विघ्न रूप बात जब सामने आती है तो वे ये ही सोचते रहते हैं—हम यहाँ किस लिए आये हैं।

और कुछ के भाग्य ने पलटा खाया—उनके विजयी रत्न बनने के स्वप्न स्वप्न ही बन गये, उनकी उमंगें स्थाई न रह सकीं। उन्हें योग-आनन्द सम्पूर्णतया प्राप्त न हो सका। उनके जीवन में ये छोटे-मोटे विघ्नों की रेखाएँ शुरू हुईं।

किसी को आगे बढ़ते ही स्वयं सुख शान्ति पाते, खज़ाना पाते दूसरों को बाँटने की तीव्र अभिलाषा हुई और वे सेवा के कार्य में तीव्रता से आगे बढ़े। कितना श्रेष्ठ लक्ष्य था उनका, परन्तु कई दूसरों को सुख शान्ति देने के श्रेष्ठ कार्य में अपनी सुख शान्ति गँवा बैठे···चले थे बड़ा बनने, होने लगी घुटाई···और उस घुटन को सहन करना उन्हें बहुत भारी पड़ा···

ये सब क्यों हुआ ? इसके कुछ कारण हैं···

आत्मा अपने उस लक्ष्य को भूल गई जो उसने प्रथम दिन निर्धारित किया था। अब उसके मन में प्रश्न उठने लगे, ये क्यूँ···ये ज्ञानी आत्मा होकर भी क्यूँ ऐसा करते हैं, वह यह भूल गये कि मैं ज्ञानी होकर भी यह "क्यूँ" का प्रश्न क्यूँ उठाता हूँ। और इस क्यूँ के चक्कर में उनकी भावनाएँ, उनके मन का वैराग्य, वह स्नेह दूर होने लगा। उसने अपने मन में अनेक चक्कर घड़ लिये जिनका उनसे कोई सम्बन्ध नहीं था, जिनकी उसे कुछ भी आवश्यकता नहीं थी। वह तो यहाँ सम्पूर्ण शान्तमय जीवन के लिए आये थे, उसे भूलकर, दूसरों को देखकर परेशान होने लगे···

कुछ के साथ यह हुआ···जो अपने दुखदाई व्यसन छोड़कर इस त्याग के मार्ग पर चले थे, परन्तु त्याग के फलस्वरूप जो साधन उन्हें मिले, उन्हें वे स्वीकार कर बैठे···दुखदायी व्यसन छूट गए, अल्प-सुखदाई साधनों में अटकने लगे। और धीरे-धीरे त्याग वृत्ति समाप्त हो गई और राजयोगी बनने के स्वप्न देखने लगे···कहने लगे···हम सन्यासी थोड़े ही हैं आदि-आदि और फलस्वरूप मान-शान के चक्कर में पड़कर पुनः अपने जीवन कोशान्ति के पथ से दूर करने लगे···

जो पढ़ाई द्वारा ऊँच बनना चाहते थे···जिन्हें सत्य ज्ञान का एहसास हो चुका था, वे अपने लक्ष्य को भूलकर दूसरों को देख, ईर्ष्या द्वेष के जाल में उलझने लगे। लौकिक पढ़ाई में इर्ष्या द्वेष नहीं होती···कहीं कहीं होती भी है···क्योंकि वहाँ भिन्न भिन्न श्रेणी के विद्यार्थी होते ही हैं और उन्हें पता है जो मेहनत नहीं करेगा···उसका क्या होगा—किसी को अलबेला देख कोई प्रथम श्रेणी का विद्यार्थी भी अलबेला हो जाए इसे समझदारी नहीं कहेंगे। परन्तु सत्य ज्ञान के बाद विद्यार्थी, कमजोर विद्यार्थी का साथ पकड़ने लगते हैं और अपने श्रेष्ठ लक्ष्य को भूल जाते हैं।

कोई ने भगवान को पाकर अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। अब तो उसके जीवन में कोई विघ्न नहीं रह जाना चाहिए। परन्तु बाद में आत्मा ने दूसरों की चीजों को अपना बना लिया। अपने हीरे छोड़कर, दूसरों के पत्थरों पर अपना अधिकार रखने लगे। अर्थात् मैं और मेरे में अटक गये। ये भूल गये कि सम्पूर्ण त्याग में ही सम्पूर्ण आनन्द है—मेरे-पन में दुख ही दुख है जिसे हमने हज़ारों वर्षों से देखा है।

कोई योगी बनने आया था परन्तु समय के फेर ने उसके मन को भिन्न-भिन्न प्रकार से भटकाये ही रखा। वह उसे अब भी एकाग्र न कर सका। अलबेलापन, सुस्ती, आसक्ति आदि ने उसे लक्ष्य को न पकड़ने दिया—

परन्तु कुछ ऐसे भी भाग्यशाली महान पुरुष रहे जिन्होंने अपने लक्ष्य को पूरा किया, जो न करेक्शन (Correction) के चक्कर में रहे, न दूसरों को सर्टिफिकेट देने के चक्कर में, न तेरी मेरी में फँसे और न ही मैं-पन में। जिन्होंने पूर्ण दृढ़ता से स्वयं को हर तरफ़ से सुरक्षित रक्खा। माया के सूक्ष्म रूप को पहचाना और विजयी बने। जो अपने को लक्ष्य से हटा हुआ अनुभव करते हैं वे पुनः एकान्त में जाकर स्वचिन्तन करें, स्वयं से पूछें कि हम आये थे किस लिए और कर क्या रहे हैं—ऐसा तो नहीं कि—

आये थे हरि भजन को
ओटन लगे कपास।

आये थे सम्पूर्ण रूहानियत के लिए और पड़ गये स्थूल साधनों में।

कर्मों का फल किसके नियंत्रण में ?

ब्र० कु० नारायणलाल सिंघल एडवोकेट, इन्दौर

एक बड़ा ही विचारणीय प्रश्न है कि इस संसार में जो कुछ कर्म किये जाते हैं उनका फल देना या प्राप्त कराना यह किसके नियंत्रण (हाथ) में है।

इस विषय में एक मत है कि मनुष्यात्माएँ अपने पुरुषार्थ अनुसार ही फल प्राप्त करती हैं अतः फल प्राप्त करना यह मनुष्य के ही हाथ में है। दूसरा मत यह है कि आत्माएँ तो निमित्त मात्र हैं, फल देने वाला परमपिता परमात्मा है। और तीसरा मत है कि संसार में जो कुछ भी हो रहा है वह सब बने बनाये विधान के अनुसार हो रहा है जिसे अन्य शब्दों में विधि या ड्रामा भी कहा जाता है।

(१) क्या कर्म फल प्राप्त करना मनुष्यों के हाथ में है?

इस विषय पर विचार करने से हम देखते हैं कि एक किसान अपने खेत में जाकर जुताई, निंदाई, बुवाई, रखवाली आदि क्रियाएँ करके खूब परिश्रम करता है लेकिन यह आवश्यक नहीं कि उसको उसके मेहनत के फलस्वरूप फसल की प्राप्ति हो ही जाय। कीटाणुओं, बाढ़, सूखे, ठंड आदि के कारण संभव है कि उसे कुछ भी फसल नहीं मिले। एक विद्यार्थी दिन रात परिश्रम करके पढ़ाई करता है, लेकिन यह निश्चय नहीं कि परीक्षाफल उसके अनुकूल ही आवे या समय पर उसके अच्छे उत्तर बन सकें और वह उत्तीर्ण हो ही जाये। एक व्यापारी बड़ी सावधानी एवं कुशलता से व्यापार करता है लेकिन यह निश्चित नहीं कि उसे लाभ हो ही जाये, उसे हानि भी हो सकती है। इस तरह हम देखते हैं कि मनुष्यात्माओं के हाथ में केवल पुरुषार्थ करना है लेकिन फल की प्राप्ति उसके हाथ में नहीं है। गीता में भी भगवान ने कहा है :—

कर्मेण्ये वाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन। २-४७
तू केवल कर्म करने में स्वतंत्र है, फल की प्राप्ति में कभी भी नहीं।

निमित्त मात्रं भव सव्य साचिन-११-३३
हे अर्जुन, तू अपने को केवल निमित्त मात्र समझ।

(२) क्या परमात्मा फल दाता है ?

दूसरा मत है कि आत्माएँ जो कर्म करती हैं उसका फल परमात्मा देते हैं। इस विषय पर भी जब हम विचार मंथन करते हैं तो देखते हैं कि संसार में असंख्य मनुष्य एवं जीव जंतु हैं जिनके द्वारा प्रतिपल भिन्न-भिन्न कर्म किये जाते हैं ..न केवल तन से बल्कि मन के संकल्पों द्वारा भी। क्या यह मानना उपयुक्त होगा कि परमात्मा सबके कर्मों का लेखा-जोखा रखते हैं और फिर प्रत्येक कर्म का फल निश्चय करके उनको वह फल प्रदान करते हैं ? आत्माओं के अलावा इस सृष्टि में सूर्य, चंद्र एवं असंख्य ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र आदि हैं जो गतिशील एवं क्रियाशील हैं और इसके अलावा वर्षा, भूचाल, तूफान आदि भी होते रहते हैं जिनका प्रभाव आत्माओं पर पड़ता है। क्या ये सब कार्य परमात्मा कराते रहते हैं ? यह सत्य है कि परमात्मा सर्व शक्तिमान है लेकिन क्या परमात्मा इन सब असंख्य कार्यों में अपनी शक्ति खर्च करते हैं ? वास्तव में परमात्मा तो महान कार्य करते हैं जैसा कि गीता में कहा है:···

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ ४-७
परित्राणाय साधुनां, विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ ४-८

हे अर्जुन, जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब मैं अवतरित होता हूँ। साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिये और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिये तथा धर्म की स्थापना करने के लिये, मैं युग-युग में आता हूँ।

साथ ही गीता के अध्याय ५ श्लोक १४ में कहा गया है कि...

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्मफल संयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥

परमात्मा भूतप्राणियों के, न कर्तापन को और न कर्मों को तथा न कर्मों के फल के संयोग को वास्तव में रचता है किन्तु सब स्वभाविक (प्राकृतिक)

(शेष पृष्ठ २९ पर)

ईश्वरीय आनन्द

ब्र० कु० सूरज कुमार, आबू

आनन्द मनुष्य जीवन का मुख्य पहलू है। आनन्द के बिना मानव जीवन नीरस प्रतीत होता है। आज, आनन्द के लिए मनुष्य अनेक साधन अपनाता है, परन्तु उसका जीवन आनन्द की आकांक्षा में ही समाप्त हो जाता है। कोई कलियुगी आनन्द पतन-कारी होता है, और कोई आनन्द, मनुष्य को जीवन का सही अर्थ बतला पाता है। ईश्वरीय आनन्द "ईश्वरीय सन्तान का जीवन रस है।" इस रस के बिना, अलौकिक जीवन, अपनी अलौकिक छाप नहीं छोड़ पाता।

वे मनुष्यात्माएँ, जिन्होंने, सृष्टि पर उतरे भगवान को पहचाना है, और उससे अपना नाता जोड़ा है, सही अर्थ में ब्राह्मण हैं। जब से किसी का ये ब्राह्मण जीवन प्रारम्भ हुआ, उसके आनन्दित दिन शुरु हुए। और उसने महसूस किया कि सांसारिक आनन्द और ईश्वरीय आनन्द में कितना अन्तर है। ईश्वरीय आनन्द धन में नहीं, महलों में नहीं, सूखी झोपड़ी में है अगर मन ईश्वर की यादों में तल्लीन हो। सांसारिक आनन्द मन को क्षणिक आनन्द देकर, आनन्द का भिखारी बनाकर विलीन हो जाता है। जबकि ईश्वरीय आनन्द अमरत्व प्राप्त कराता है और जन्म-जन्म के सुखों का आधार बन जाता है। सांसारिक आनन्द टिमटिमाते तारे तुल्य हैं जबकि ईश्वरीय आनन्द, रात्रि के श्रृंगार, सम्पूर्ण चन्दा की तरह।

ईश्वरीय ज्ञान-युक्त ब्राह्मण जानते हैं कि हम देवताओं के सामीप्य में भी कई जन्म रहे, मनुष्यों के संग का अनुभव भी हमने जन्म-२ किया, परन्तु ईश्वरीय मिलन का आनन्द, अब कल्पान्त में एक ही बार हुआ है। तो समझदार व्यक्ति इस ईश्वरीय आनन्द को, एकरस चखने के लिए सदा लालायित रहते हैं। उनका मन यही इच्छा रखता है कि हम सदा भगवान के संग ही रहें। क्योंकि भगवान के संग का आनन्द क्या होता होगा, इसका अनुभव केवल वे ही कर सकते हैं। जिस परमपिता की याद ही मन को शान्ति देती है, उसका संग क्या आनन्द देता होगा, इसका अनुभव कुछ विशिष्ट आत्माएँ ही कर पाती हैं। कितने श्रेष्ठ भाग्य वाली हैं वे आत्माएँ जिन्हें भगवान के संग रहने का सर्व-श्रेष्ठ अवसर मिला है!

यों तो ईश्वरीय जीवन आनन्दपूर्ण जीवन है, फिर भी इस जीवन को ईश्वरीय सुखों से ओत-प्रोत करने के लिए, कुछ विशेष पहलुओं पर ध्यान देना अति आवश्यक है। हमारे चारों ही विषय ईश्वरीय आनन्द के प्रमुख साधन हैं।

ईश्वरीय ज्ञान—ज्ञान एक अमूल्य खज़ाना है। ज्ञान से भरपूर आत्मा को इसी प्रकार आनन्द प्राप्त होता है जैसे किसी धनवान को अपने खज़ानों को देख देखकर। परन्तु कई बार आत्माएँ स्वयं को ज्ञान से खाली सा महसूस करती हैं। इसके लिए ज्ञान मनन की आवश्यकता है। इससे ज्ञान खज़ाना वृद्धि को भी पाता है, और ज्ञान-बल हमारे जीवन में अस्त्र-शस्त्र की तरह काम आता है। माया दुश्मन के वारों को, हम ज्ञान के हथियारों से विफल करके आनन्दित जीवन जी सकते हैं।

हम रोज़ भगवान के महावाक्य सुनते हैं। "हम भगवान के बोल सुनते हैं"—यह स्मृति ही आत्मा को आनन्दित कर देती है। ज्ञान की गुह्य बातें हमें ईश्वरीय नशा प्रदान करती हैं जिससे आत्मा मन-रस प्राप्त करके आनन्दित होती है। अतः ईश्वरीय रस की इच्छा रखने वालों को ईश्वरीय महावाक्यों में सम्पूर्ण रुचि रखनी चाहिए। इस ज्ञान-मुरली के मधुर स्वरों से, इस ज्ञान-वर्षा के समय मन-म्यूर नाचने लगता है।

ज्ञान-मनन का रस जिसे लग जाता है, फिर उसे प्राप्त ईश्वरीय प्रेरणाएँ अति आनन्ददायक होती हैं। फिर आत्मा दिव्य विचारों का आनन्द ग्रहण करती है। इन विचारों को पाकर आत्मा बहुत शक्तिशाली हो जाती है। उसकी दुःखदायक संकीर्ण

विचारधारा समाप्त हो जाती है। और अडोल स्थिति प्राप्त होती है, जो उसके आनन्दित जीवन का ठोस आधार बन जाती है।

ईश्वरीय ज्ञान हमें खेलने के खिलौनों के रूप में प्राप्त हुआ है। इन ज्ञान-रत्नों से खेलने वाली आत्मा, अनुपम ईश्वरीय खुशी प्राप्त करती है। तब ही हमें भी ज्ञान रत्नों के महत्व का आभास होता है। और परिणामतः अन्य आत्माएं भी इन ज्ञान-रत्नों को उसी महत्व से श्रवण करती हैं।

इस प्रकार यह ईश्वरीय ज्ञान जीवन को आनन्दित करने की राह दिखाता है। ये ज्ञान, प्रकाश हमारे मन के अन्धकार को दूर करके जीवन को आलोकित करता है। अगर ईश्वरीय ज्ञान पाकर भी जीवन आनन्दित नहीं हुआ, तो भला ईश्वरीय आनन्द क्या मृगतृष्णा तुल्य ही नहीं रह जायेगा।

सहज ईश्वरीय योग— योग अर्थात "भगवान के साथ रहना"। भगवान क्या है—इसका अनुभव उसके साथ रहकर ही किया जा सकता है। भगवान के सागर-समान गुणों की महसूसता जीवन के आनन्द में चार चाँद लगा देती है। परन्तु स्थाई परम आनन्द की अनुभूति प्रतिदिन ८ घण्टे योगाभ्यास के बाद ही होती है।

ईश्वरीय सामीप्य के अनुभव के लिए, अशरीरी-पन की गहन अनुभूति मुख्य पहलू है। आत्मा जब स्वयं को शरीर से भिन्न अनुभव करती है तो मन के संकल्पों की गति बहुत धीमी हो जाती है और मन परम-शान्ति की लहरों में लीन हो जाता है। यह सूक्ष्म परम आनन्द का अनुभव भी अति निराला है।

'योग' में दूसरा अनुभव भगवान से वार्त्तालाप करने का है। किसी महान पुरुष से दो बात करके भी मनुष्य कितना आनन्दित होता है। और भगवान से वार्त्तालाप हो·····इस आनन्द के अनुभव को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। और यह वार्त्तालाप भी अगर मित्रवत् हो तो कहना ही क्या···। परम मित्र, खुदा दोस्त से जब दिल की बातें हों, तो दिल कितनी चैन पाता होगा, इसकी कल्पना भगवान के लाल ही कर सकते हैं। जिनका नाता भगवान से जुड़ गया हो, जिन्हें भगवान की छत्र-छाया प्राप्त हो, उनसे अधिक आनन्दित भला कौन हो सकता है।

इस परम आनन्द का अनुभव अमृतवेले व दिन ढले अच्छा होता है। क्योंकि तब मन शान्त होता है और आसुरी आनन्द वाले लोग सोये होते हैं। अमृतवेले अगर मन को ज्ञानामृत से भरपूर कर दें तो यह आनन्द अधिक स्थाई होता है। इसी ब्रह्म महूर्त्त में हम सहज ही ब्रह्मलोक में स्थित रह सकते हैं। साथ ही साथ सारे दिन भी अगर किसी विशेष अभ्यास द्वारा मन को भटकने से बचाया जाये तो शाम के शान्त समय का ईश्वरीय आनन्द भी आत्मा की अनमोल पूंजी बन जाता है।

'एकाग्रता' अद्भुत आनन्द की जननी है। हर अभ्यासकर्त्ता को चाहिए कि वह कम से कम ५ मिनट एकान्त में जाकर एकाग्रता की शक्ति अवश्य बढ़ावे। क्योंकि यह योग व योग द्वारा प्राप्त परमानन्द प्रसिद्ध उपलब्धियां हैं। ये प्राप्ति किसी विशेष पुण्यात्मा या धर्मात्मा को ही होती है। इसके महत्व को जानकर, इस पर विशेष ध्यान एकाग्र करना चाहिए क्योंकि सांसारिक आनन्द तो पूरा कल्प ही प्राप्त होंगे। ईश्वरीय आनन्द का यही स्वर्ण काल है। अगर अब दिव्य अनुभव न किये तो पूरा कल्प ही आनन्द विहीन स्थिति में व्यतीत करना पड़ेगा।

दिव्य धारणाएँ—धारणाओं की जड़ 'पवित्रता' हमारे ईश्वरीय आनन्द का प्रमुख आधार है। कलि-युगी मनुष्य अपनी शक्तियों को नष्ट करके भोग-विलास द्वारा आनन्द का इन्तजार करते हैं, जो कि विषधर बनकर उन्हें ही नष्ट करता चला आ रहा है। और हम अपनी ब्रह्मचर्य की शक्ति को संग्रहित करके जीवन को इतना आनन्दित करते हैं जो हमें

संसार के आनन्द आकर्षित नहीं करते। तो वास्तविक आनन्द शक्तियों के संग्रह में है, नष्ट करने में नहीं।

देह-आकर्षण का आनन्द, ईश्वरीय आनन्द का घातक है। दैहिक आनन्द या कर्मेन्द्रियों का आनन्द मन को सन्तुष्ट नहीं कर सकता। ये सर्व आनन्द तृष्णाओं की अग्नि को बढ़ाने वाले हैं। इन क्षणिक आनन्दों से ऊपर उठकर ही हम परमानन्द में झूम सकते हैं। ये कर्मेन्द्रियों के आनन्द, "आदि में आनन्द व अन्त में विष समान हैं।" जबकि ईश्वरीय आनन्द आदि, मध्य, अन्त सुख प्रदायक है।

जिसके पास पवित्रता का खज़ाना जितना अधिक है, वह आत्मा उतना ही आन्तरिक आनन्द प्राप्त करती है। अगर मन में उलझन है, सांसारिक खेंच है, कुछ सांसारिक प्राप्तियों की इच्छा है तो आनन्द भी मृग तृष्णा समान है।

इसलिए इस अनमोल ईश्वरीय आनन्द को प्राप्त करने के लिए मन में पूर्ण सन्तोष होना आवश्यक है। बार-बार उठी हुई अल्पकालीन इच्छाएँ, सदा काल के आनन्द को समाप्त कर देती हैं। इसलिए भगवान की प्राप्ति के बाद, अन्य इच्छाओं से मुक्ति होनी चाहिए। ये अनुभूति—"जिसे पाने के लिए हमने सब कुछ छोड़ा था, उसे पाकर भी हे मन, तू क्या पाना चाहता है"—तृष्णाओं को शान्त कर देती है। इच्छाएँ समाप्त होती जाएं, तब ही इस ईश्वरीय जीवन का सच्चा सुख ग्रहण किया जा सकता है। सांसारिक साधनों के सुखों में लिप्त आत्मा ईश्वरीय सुख की अनुभूति से कोसों दूर रहती है।

जो आत्माएं अपने संकल्पों को व्यर्थ नहीं करतीं, उन्हें ईश्वरीय आनन्द वरदान के रूप में प्राप्त होता है। और जिसके सामने जीवन का कोई ठोस लक्ष्य ही न हो, वे तो ईश्वरीय आनन्द केवल ईश्वरीय कृपा से ही प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए अन्तर्मुखता से सजी हुई, समझदार आत्मा ही इस अलौकिक आनन्द की भागीदार बनती है।

ईश्वरीय सेवा—चाहे किसी भी प्रकार की हो, जब मन से की जाती है, तो आनन्द का साधन बन जाती है। जैसे गरीब को दान करने से दानी को आन्तरिक सुख मिलता है, वैसे ही ज्ञान-धन-विहीन रूहों को प्रभु-मिलन का रास्ता बताने से, बहुत ही आनन्द की प्राप्ति होती है। भटकती रूहों को सत्य राह दिखाने से उनका आशीर्वाद हमारे जीवन को अवश्य ही प्रभावित करता है।

इसी प्रकार तन, मन, धन से ईश्वरीय सहयोग, ईश्वरीय स्नेह का व ईश्वरीय सहयोग का पात्र बना देता है। जब हम किसी को सुख देते हैं तो बदले में हमें डबल सुख प्राप्त होता है। हमारी शुभ-भावनाएं हमारे जीवन को शुभ बना देती हैं। ये ईश्वरीय सेवाएँ भी किसी सौभाग्यशाली को ही मिलती हैं। और जीवन को जन्म-जन्म के लिए आनन्दित कर देती हैं।

इस सेवा क्षेत्र में आनन्द का आधार "मैं-पन का त्याग" है। यह त्याग आत्मा को अत्यधिक आन्तरिक सुख देता है। यों तो हर तरह का त्याग हमारे ईश्वरीय सुख का आधार है, तथापि मैं-पन का त्याग जीवन में अति दिव्यता प्रदान करता है।

हम सबमें से अनेक आत्माएं, ज्ञान-योग के आधार से आनन्दित हो रहीं हैं। सब ही सच्चे अर्थ में जीवन रस प्राप्त कर रही हैं। भगवान की सन्तान बनकर भी, उसके समीप आकर भी अगर किसी ने ईश्वरीय आनन्द से अपनी झोली न भरी तो क्या किया? इसलिए वे सब छोटी-मोटी बातें, जो हमारे श्रेष्ठ आनन्द को नष्ट करती हैं, हमें दृढ़ संकल्प से त्याग देनी चाहिए और ईश्वरीय रस चख-चखकर स्वयं को सम्पूर्ण कल्प के लिए इतना सन्तुष्ट कर लेना चाहिए जो हमारी सन्तुष्टता की किरणें, सर्व आत्माओं को सन्तुष्टता प्रदान करती रहें।

★

"जीवन को शिव पर बलिहार कर दिया"

(ब्र० कु० मदन लाल शर्मा, जयपुर)

आध्यात्मिक पथ पर जीवन को समर्पित कर देना, सर्वोच्च बलिदान है। जीवन ही दे दिया, तब अपना कुछ भी नहीं रहा और अपनत्व समाप्त होने से मनुष्य रूहानियत की सर्वश्रेष्ठ स्थिति को प्राप्त कर सकता है। एक ही बार तो सबके प्रिय प्रभु धरा पर आते हैं, और तब उन्हें पहचान कर जो मनुष्य उनके पवित्र स्नेह में अपना सर्वस्व स्वाह कर देते हैं, वे ही गायन व पूजन योग्य बन जाते हैं। इसी बलिदान की याद में भक्ति में बलि चढ़ाने का परम महत्त्व है। लोग तो मन्दिरों में जाकर शिव पर पुष्प चढ़ाते हैं परन्तु जो पिता अपने चेतन फूलों को ही शिव पर चढ़ा देता है, उसे परमपिता शिव सहर्ष स्वीकार करके, उसको मन वांछित फल प्रदान कर देते हैं।

बलि चढ़ना :—बलि चढ़ना अर्थात् तन, मन और धन से शिव पिता पर समर्पित होना। सच्चा जीवन उन आत्माओं का ही है जो संगम युग में शिव परमात्मा को पहचान अपना सर्वस्व उन्हों को ही अर्पित करते हैं। क्योंकि जीवन (जी अर्थात् जीना, वन अर्थात् one पहले नंबर का) उन्हीं का ही है जो गृहस्थ में रहकर कमल पुष्प समान पवित्र बनते, न कि जो घर बार का त्याग कर वन अर्थात् जंगल में जाकर जीवन जीते हैं।

(i) **तन से बलिहार जाना** :—तन से बलिहार जाना अर्थात् देह-अभिमान का त्याग कर "मैं शुद्ध आत्मा हूं" इस स्मृति में सदा रहना। क्योंकि शिव बाबा हमें स्मृति देते हैं—हे आत्मन्, तुम देह नहीं, परन्तु एक अविनाशी ज्योतिर्बिन्दु आत्मा हो। इसीलिए जितना हम आत्माभिमानी बनकर अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ की सेवा करते हैं उतना हम तन से बलिहार जाते हैं। फलस्वरूप भविष्य में कंचन, निरोगी काया प्राप्त होती है।

(ii) **मन से बलिहार जाना** :—मन से बलिहार जाना अर्थात् देह और देह की दुनिया को भूलकर निरन्तर एक शिव पिता की ही स्मृति में मग्न रहना। क्योंकि शिव बाबा ने गारण्टी (Guarantee) दी है कि "जितना मुझे याद करेंगे उतना मैं तुझ आत्मा को पावन बनाऊंगा।" मन के शुद्ध संकल्पों द्वारा विश्व की सेवा करना भी मन से बलिहार जाना है। परिणामतः हमारा मन वर्तमान और भविष्य में भी सदा शान्त और शीतल रहता है।

(iii) **धन से बलिहार जाना** :—धन से बलिहार जाना अर्थात् स्वयं के तथा परिवार के लिए धन लगाकर जो बचता है उसे परमात्मा के कार्य में लगा कर सफल करना। क्योंकि जहां हमारा धन लगेगा वहां स्वतः ही मन भागता रहेगा जिससे प्राण प्यारे शिव बाबा की मधुर स्मृति अमिट बनी रहेगी और भविष्य में भी धन के खज़ाने से भरपूर रहेंगे।

एक धक से बलिहार जाने का विशेष महत्त्व :—भक्ति मार्ग में देवियों के आगे उसी बकरे को बलि चढ़ाते हैं जो एक धक से मरता है। ऐसे ही जो बच्चे शिव परमात्मा को पहचान कर एक धक से झाटकू बन अपना सब कुछ अर्पित करते, वे विशेष भाग्य प्राप्त करते। इसका ज्वलन्त उदाहरण ब्रह्म बाबा है। ब्रह्मा बाबा ने शिव बाबा को पहचानते ही अपना सब कुछ शिव बाबा को अर्पित किया और नई दुनिया की स्थापना के कार्य में मददगार बन नंबर वन भाग्य प्राप्त किया।

बलिहार जाना ही परमात्मा का सच्चा उपहार है :—शिव के भक्त तीन पत्तों का बेल पत्र शिव लिंग पर चढ़ाते हैं। उसको ही परमात्मा का उपहार मानते हैं। लेकिन शिव परमात्मा वर्तमान समय समझा रहे हैं तन, मन, धन रूपी तीन पत्तों का मनुष्य रूपी बेलपत्र मैं स्वीकार करता हूं। ऐसे

समर्पित बच्चे ही मेरा सच्चा उपहार हैं। क्योंकि वे ही स्वर्ग बनाने के कार्य में मेरे सच्चे मददगार (Right hand) बनते हैं।

जो जाएगा बलिहार, बदल सकेगा पुराने संस्कार :—जो आत्माएँ सर्वस्व शिव पर बलिहार जाती हैं उन्हीं का संसार ही शिव बाबा बन जाता है। उन्होंका बुद्धियोग सदा एक परमात्मा, सर्वशक्तिवान से जुटा रहने से सर्व शक्तियों की बहार जीवन में अनुभव करते हैं। और शक्तियों के आधार से कड़े से कड़े पुराने संकारों को सहज बदलकर नये दैवी संस्कार धारण कर लेते हैं।

वही पायेगा परमात्मा का असीम प्यार :—जिससे हमारा प्यार होता है उस पर ही हम बलिहार जाते हैं। और प्यार से ही प्यार मिलता है। भोलानाथ शिव बाबा जो प्यार का सागर है, उन्हों का प्यार भी उन बच्चों पर बरसता है जो अपना सब कुछ शिव बाबा पर बलिहार करते हैं। ऐसी भाग्यशाली आत्माएँ ही उस परमपिता के नयनों में सदा समाए हुए रहते हैं।

वही बनेगा फल खुशबूदार :—जो आत्माएँ शिव पर बलिहार जाती हैं वे सदा ईश्वरीय नशे में चूर रहती हैं। अथाह खुशी में नाचते रहते हैं। जीवन को हरा-भरा अनुभव करते हैं। उन आत्मा रूपी फूलों से सदा उमंग उल्लास की खुशबूएँ छलकती रहती हैं। अपने संग से अनेक आत्माओं के जीवन को भी खुशबूदार बना देते हैं।

वही बनेगा हकदार :—जो अपने स्थूल तथा सूक्ष्म खजाने परमात्मा को अर्पित करते हैं, उन्हों को भोला शिव बाबा अखुट अविनाशी ज्ञान रत्नों के तथा शक्तियों के खज़ानों से भरपूर करता है। सारे कल्प में उन आत्माओं का विशेष पार्ट रहता है।

उसका ही होगा सभी को साक्षात्कार :—जो संगम युग में शिव पर बलिहार जाते हैं, वे आत्माएँ अपनी सम्पूर्ण स्थिति का अर्थात् कर्मातीत अवस्था का अनुभव यहां ही करते हैं। जिसके आधार से इष्ट देव बन अपने भक्तों को विभिन्न स्थानों पर साक्षात्कार कराते रहते हैं। और संगम युग में ही ऐसे महान् आत्माओं की प्रत्यक्षता होने लगती है।

वही कर सकेगा सच्चा शृंगार :—जो आत्माएं शिव साजन पर एकदम फिदा हो जाते हैं उन आत्माओं रूपी सजनियों को शिव साजन अविनाशी शृंगार से सजाता है। कर्मेन्द्रियों को आलौकिक शृंगार से सजाकर सजी सजाई चेतन मूर्तियाँ बनाते हैं। फलस्वरूप भक्ति मार्ग में भी भक्त लोग उन्हीं की जड़ मूर्तियों को शृंगार कर गायन पूजन करते हैं।

उसे ही करेगी माया नमस्कार :—जो आत्माएं परमात्मा को अपना बना लेते हैं उन्हों का सर्वशक्तिवान परमात्मा सदा पाठीराखा (Backbone) बनता है। सर्वशक्तिवान का साथ रहने से माया उन आत्माओं पर वार करने की हिम्मत नहीं रखती और दूर से ही नमस्कार करती है।

बलिहार जाना ही बलवान बनना है :—बलिहार जाने वाली आत्माओं को कदम-कदम पर बल देने के लिए परमात्मा कर्ज़दार है। जब भी कोई समस्या के घेरे में फँसता है तो भगवान नंगे पांव दौड़कर उसे मदद करता है और उसकी जीवनरूपी नैया को भवसागर से निर्विघ्न पार लगाता है। अनेक समस्याओं को हँस-हँस कर पार करनें से वे आत्माएँ स्वतः ही बलवान बन जाती हैं।

अतः अब तक तो हम परमात्मा की जड़ मूर्तियों पर पुष्प चढ़ाते आए, अब समय है अपना तन, मन, धन उस पर बलिहार करके, जन्म-जन्म की पूंजी प्राप्त करें। यह श्रेष्ठ अवसर किन्हीं भाग्यशाली आत्माओं को ही प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर शिव को खुश करके सर्वस्व प्राप्त करने के लिए "अपना-पन" मिटा डालें।

रांची संग्रहालय में शिव जयन्ति महोत्सव पर हुए झंडारोहण के पश्चात् भ्राता पी० डी० शर्मा, शशीनाथ मिश्रा न्यूज़ एडीटर, आकाशवाणी केन्द्र समाचार विभाग तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहनें शिव स्मृति में मग्न खड़े हैं।

झज्जर में आध्यात्मिक कार्यक्रम में (बाएं से) ब्र० कु० कृष्णा (बैज लगाते हुए) भ्राता साधूराम वर्मा, भ्राता अर्जुन दास जी तथा भ्राता लाल चन्द जी।

शिवसागर (आसाम) में आध्यात्मिक समारोह से पूर्व ध्वजारोहण के पश्चात शिव बाबा की स्मृति में खड़े हैं वहाँ के भाई बहनें।

हनुमान गढ़ में वहां के चेयरमेन बहादुर चन्द जैन आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए।

रायचूर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित इन्टर कालेजिएट डीबेट कम्पीटिशन का उद्घाटन दृश्य। (बाएं से) भ्राता अनन्त मूर्ति, प्रिन्सीपल टैगोर जूनियर कालेज, भ्राता एस० शंकर मुन्सिफ़ मैजिस्ट्रेट तथा प्रिन्सीपल जी० डी० नायक।

'एप्रिल फूल'

ब्र० कु० शारदा, अकोला

जो बार बार श्रीमत को भूल जाता
और मनमत का बार बार ढोल बजाता
वह कौन है ? आज का एप्रिल फ़ूल

जो देह और देह के सम्बन्धी याद करता
स्व-दर्शन-चक्र को भी भूल कुदर्शन करता
वह कौन है ? आज का एप्रिल फ़ूल

मेरा बाबा मेरा बाबा मुख से कहता
अन्दर दिल में क्रोध का बम फट से फूटता
वह कौन है ? आज का एप्रिल फ़ूल

केंद्र पर आकर ज्ञान रतन को सुनता
दैवी गुणों को छोड़ सदा व्यर्थ का बनता
वह कौन है ? आज का एप्रिल फ़ूल

बात बात पर ज्ञान की बातें, भरपूर करता
पुरुषार्थ का जब समय आता ज्ञान को जाता भूल
वह कौन है ? आज का एप्रिल फ़ूल

ज्ञान में चलता है, और नियमों को पढ़ता है
अन्यों के दोषों को देख, उन पर उछलता
वह कौन है ? आज का एप्रिल फ़ूल

अन्तर्मुखता और पुरुषार्थ को छोड़ कविता करता
बात बात पर बस, अपनी ही जबान चलाता
वह कौन है ? आज का एप्रिल फ़ूल

"खुशियों के रंग

विजय अग्रवाल, कृष्णा नगर क्या

शिव बाबा की
याद में,
जो दिन गुज़रे
जीवन में
अनगिन,
खुशियों के रंग भरे।
मुरझाया सा
देही-देह था,
अकुलाया सा मन
सुलग रहा था
तन-मन-धन,
सूना-सूना
लगता था जीवन !
गोद मिली
शिव बाबा की
जीवन आबाद करे !
खोये-खोये
ढूंढ़ रहे थे,
कहीं ठौर ना ठाँव,
जागे हम
जब सोया सारा गाँव,
संयम में
रहना सीख गये,
शिव ने बन्सी पर
ऐसे बोल धरे ! !

भुवनेश्वर में शिवरात्रि के अवसर पर ब्र० कु० सन्देशी शिव बाबा का ध्वज फहराते हुए।

रड़क चौथ या अटक चौथ ?

ले० ब्रह्माकुमारी चक्रधारी

भारत देश त्यौहारों का देश है। यहाँ के लिए कहावत प्रसिद्ध है कि अगर एक वर्ष में ३६५ दिन होते हैं तो यहाँ ३६६ त्यौहार मनाये जाते हैं। हर दिन एक नया त्यौहार, नई रस्म, नया व्रत मनाने का होता है। लेकिन इन त्योहारों के आध्यात्मिक रहस्य को जाने बिना मनाने से आजकल के नवयुवक व नवयुवतियों का उनसे विश्वास ही उठ गया है। और दिनोंदिन आस्तिकवाद की बजाय नास्तिकवाद ही फैलता जा रहा है। भक्ति-पूजा के नाम पर कर्मकाण्ड, थोथे रस्म-रिवाज और अन्धश्रद्धा से किये गये व्रतों को देखकर अफ़सोस भी होता है और हंसी-सी भी आती है। इसी पर एक छोटा-सा किस्सा याद आ रहा है, जो आज मैं आपको सुनाऊँगी।

कुछ वर्ष पूर्व की बात है कि कुल तीन ही सदस्यों का एक छोटा-सा परिवार था। माँ, बेटा और बेटे की पत्नी। सास और बहू का व्रत-नियम में अत्यधिक विश्वास (अन्ध विश्वास) था। वे नित्य नये-नये व्रत रखतीं जिसमें कभी केवल मिठाई ही खाकर व्रत तोड़ना होता और कभी विभिन्न प्रकार के पकवान बनाकर। किसी में अन्न न खाना होता तो किसी में नमक। बेटा रोज़-रोज़ के इन नये व्रतों की चर्चा सुनकर परेशान भी होता मगर कुछ कर न सकता।

एक दिन की बात है, जब वह सुबह नहा-धोकर अपने आफ़िस जाने के लिए तैयार हुआ तो देखता क्या है कि दोनों—माँ और पत्नी रसोईघर में बादाम, काजू, पिस्ता आदि डालकर लड्डू बनाने की तैयारी में लगी हुई हैं। वह मन-ही-मन सोचने लगा कि आज न जाने इनका कौन-सा व्रत है जिसकी सुबह से ही तैयारी शुरु हो गई है। उससे रहा न गया और आखिर उसने अपनी माँ से पूछ ही लिया कि 'माँ, आज आप दोनों का कौन-सा व्रत है?'

माँ ने बड़ी खुशी-खुशी जवाब दिया—"बेटा, आज रड़क चौथ है।"

बेटे ने पूछा—"माँ, रड़क चौथ क्या होती है?"

माँ ने बताया—"बेटा, छत पर जो ढलवान में टीन लगी हुई है, सायंकाल को उस पर से हम ये लड्डू लुढ़कायेंगे। नीचे फर्श पर एक कपड़ा बिछा होगा। जो लड्डू रड़क-रड़क कर उस कपड़े पर आ गिरेंगे, हम दोनों वही लड्डू खाकर अपना व्रत पूरा करेंगी। बेटा, इसीलिए ही आज के दिन को रड़क चौथ नाम दिया गया है।" इतना कहकर वह मुस्कुराती हुई भुनते हुए आटे की ओर देखने लगी।

बेटे ने माँ से विदाई ली और ऑफ़िस की ओर चल दिया। वह मन-ही-मन कुछ सोच रहा था। उसे रड़क चौथ के अर्थ को सुनकर अन्दर ही अन्दर आश्चर्य भी हो रहा था और हंसी भी आ रही थी। उसको मन में यह दुःख भी था कि किस प्रकार कर्म-काण्डियों ने अनपढ़ लोगों को थोथे रस्म-रिवाजों में उलझा रखा है जो वे बिना सोचे-समझे उनके कहे अनुसार चलते रहते हैं।

अचानक उसको एक तरकीब सूझी और उसके

चेहरे पर एक भीनी-सी मुस्कान फैल गई। उसने ऑफिस से हॉफ डे (Half day) लिया और अपने घर की ओर चल दिया। घर पहुंच कर उसने देखा कि सास और बहू दोनों अभी तक लड्डू बनाने में तत्पर थीं। वे इतनी तल्लीन थीं कि उन्हें इतना भी मालूम न पड़ा कि किसी ने घर में प्रवेश किया है। वह चुपचाप छत पर चला गया और उस पर लगी टीन को उसने कुछ ऐसा मोड़ दे दिया तथा एक पतली-सी लकड़ी के ऐसे टुकड़े सेट कर दिये जिससे कोई भी लड्डू फ़र्श पर न गिरे और सारे ही लकड़ी के सहारे अटक जायें।

साँझ होने ही वाली थी। वह इसी इन्तज़ार में था कि कब दोनों ऊपर जाएं और लड्डुओं को लुढ़काने की क्रिया प्रारम्भ करें। उसे मन में हंसी भी आ रही थी परन्तु बाहर से वह सदा की भाँति गम्भीर था।

आखिर वह क्षण भी आ पहुंचा। बहू ने जल्दी-जल्दी नीचे फ़र्श पर एक स्वच्छ वस्त्र बिछा दिया और फिर सास और बहू दोनों बड़ी खशी-खुशी लड्डुओं का थाल लिए छत की ओर बढ़ने लगीं। छत पर पहुंचकर सास ने पहला लड्डू गिराया। अरे, यह क्या, यह तो अटक गया। नीचे पहुँचा ही नहीं! उसने फिर दूसरा लड्ड गिराया! उसका भी वही हाल हुआ जो पहले का था। सास जी का दिल धड़कने लगा, पर यह सोचकर उसने अपने मन को तसल्ली दी कि सभी लड्डू थोड़े ही अटक जायेंगे। थोड़े अटकेंगे, थोड़े रड़केंगे। और फिर उसने तीसरा, चौथा, पांचवां, छठा, सातवाँ लड्डू गिराया लेकिन कोई भी तो नीचे न पहुंचा। उसने बनावटी हंसी हंसते हुए अपनी बहू से कहा—"बेटी, मैं बूढ़ी हो चली हूं। अब मेरी भुजाओं में इतना दम नहीं रह गया। अब तुम ही लुढ़काओ।" फिर बहू ने लड्डू उठाया और ईश्वर का नाम लेकर उसे टीन पर लुढ़का दिया। अरे, यह क्या, यह लड्डू भी नीचे न पहुंचा! धीरे-धीरे बहू ने सारे ही लड्डू गिरा दिये। परन्तु, अफ़सोस! एक भी लड्डु नीचे न पहुंचा। दोनों एक-दूसरे का मुंह देखने लगीं। बहू ने कहा—"माताजी, अब क्या होगा? अब हम अपना व्रत कैसे खोलेंगे?"

उधर नीचे खड़ा बेटा भी यह दृश्य देख रहा था और उनका वार्त्तालाप सुन रहा था। वह अपनी सफ़लता पर मन ही मन खुश भी हो रहा था। परन्तु उसने गम्भीर मुद्रा में माँ को आवाज़ लगाई कि "माँ, आपका तो एक भी लड्डू नीचे नहीं पहुंचा। अब आप लोग क्या खाओगे?"

माँ ने कहा—"बेटा, कोई बात नहीं। तू चिन्ता न कर, मैं अभी पण्डित जी से पूछकर आती हूं कि आज कौन-सा व्रत है। कहीं मेरे समझने में कुछ ग़लती तो नहीं हो गई।"

इतना कहकर मां अपने दुपट्टे का पल्लू संभालती हुई सीढ़ियों से नीचे उतर आई और चप्पल पहन कर पण्डित जी से पूछने चल दी। पण्डित जी के पास पहुंचकर उसने सारा किस्सा उन्हें सुनाया। पण्डित जी ने ध्यान से उसकी बात को सुना और कुछ सोचकर चश्मे को ऊपर करते हुए बोले—"अरे माता जी, कुछ समझने, समझाने की भूल हो गई। आज 'रड़क चौथ' नहीं, आज तो 'अटक चौथ' है। इसलिए जो लड्डू अटक जाएँगे, आपको वही खाकर व्रत पूरा करना है।"

यह सुनकर माँ जी बहुत खुश हो गईं और पण्डित जी को नमस्कार कर तेज़ कदमों से घर की ओर बढ़ने लगीं। घर के गेट पर पहुंचते ही उसने अपने बेटे तथा बहू को आवाज़ लगाई और बोलीं—"अरे बेटा, आज रड़क चौथ नहीं, आज तो अटक चौथ है। इसलिए जो लड्डू अटक गये हैं, आज हमें वही खाकर अपना व्रत पूरा करना है। यह सुनकर बहू भी प्रसन्न हो गई और जल्दी से टीन पर अटके हुए लड्डू इकट्ठे करने लगी। यह दृश्य देखकर बेटा खिलखिला कर हँस पड़ा। उसने उन दोनों को कहा—"कमाल है आपकी और आपके पण्डित जी की। आपको मालम हो कि मैंने टीन को कुछ इस तरह से मोड़ दिया था और कुछ लकड़ी के टुकड़ों को ऐसे रख दिया था जिससे एक भी लड्डू नीचे न गिरे। और आपके पण्डित जी ने

कह दिया कि आज रड़क चौथ नहीं, आज अटक चौथ है !" यह बात सुनकर दोनों आश्चर्य से कभी एक-दूसरे को देखतीं, कभी बेटे को। तब से लेकर उन्होंने प्रतिज्ञा की कि अब हम बिना सोचे-समझे कोई भी कर्म-काण्डों में नहीं जायेंगे। त्यौहारों व व्रतों के आध्यात्मिक रहस्य को जानकर सच्चा ही व्रत रखेंगे, सच्चे त्यौहार मनायेंगे और जीवन को महान् बनायेंगे।

प्यारे बच्चो, इसीलिए परमपिता परमात्मा शिव कलियुग के अन्त में, जो अत्यन्त धर्म-ग्लानि का समय है, इस धरा पर अवतरित होते हैं और आकर के सभी त्यौहारों, उत्सवों व व्रतों का आध्यात्मिक रहस्य समझाते हुए उसे जीवन में अपनाने की शिक्षा देते हैं। अच्छा, ओमशान्ति।

बड़ौदा में विश्वदर्शन प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर भ्राता शिरीषभ पुरोहित जी, ज्योति भाई पटेल, ब्र०कु० मीना, और अन्य ब्र० कु० भाई बहन खड़े हैं।

जलगांव में आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् ब्र० कु० पुष्पा जलगांव के कलेक्टर भ्राता भास्करराव को श्रीकृष्ण का चित्र भेंट करते हुए।

शाहदरा (देहली) सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० कमला, भ्राता धनप्रकाश जी, प्रेम बहन तथा सुमन बहन उपस्थित हैं।

श्रेष्ठ बनो, श्रेष्ठ करो

आबू में विश्व शान्ति सम्मेलन में ब्र०कु० हृदय-मोहिनी जी के भाषण के अंश

आप सभी ने जीवन में सदा काल के लिए शांति कैसे हो, उसके लिये बहुत सी बातें सुनीं और इतना तो स्पष्ट हो ही गया कि विश्व में शांति का साधन ईश्वरीय ज्ञान है। **ज्ञान के बिना सद्गति नहीं।** यह कहावत तो आप सभी ने सुनी है। ज्ञान शक्ति है (Knowledge is might, Knowledge is power) ज्ञान धन है (Knowledge is source of income) जो कुछ भी आपने सुना उन सबका सार यही था।

देखो, बीज बहुत छोटा होता, परन्तु फल बहुत मिलता। इसी प्रकार यह छोटा सा ज्ञान **पवित्र बनो, योगी बनो,** पर कमाई कितनी **जबरदस्त २१ जन्मों के लिए।** मुझे याद है, जब हम शुरू-२ में ब्रह्मा बाबा से मिले तो प्यारे बाबा ने दो शब्द बोले थे—**अल्फ और बे—आप और बाप।** फार्मूला छोटा-सा है जो हमें संदेश देता—श्रेष्ठ बनो, श्रेष्ठ करो ("Be good, do good") यदि ये २ शब्द प्रैक्टिकल में लायें तो सदा काल की शांति। अशांति का कारण है ५ विकार। जिनके द्वारा हमसे पाप कर्म होते हैं। क्योंकि "जहां पाप है, वहां बाप नहीं।" कई कहते हैं बहन जी, आत्मा और परमात्मा यह शब्द तो हम जानते हैं, परन्तु हम कहते, अभी जानना ही काफ़ी नहीं, बल्कि उसका स्वरूप बनो। आप सभी अनुभवी हो कि अंधकार से प्रकाश होने में एक सेकण्ड लगता है। इसी प्रकार अज्ञान अंधकार से ज्ञान प्रकाश आने में भी एक सेकण्ड लगता है। अभी अपने को भी भूल गये हैं जिस कारण शक्ति नहीं, कमजोर महसूस करते हैं। इसलिए आत्मानुभूति एवं ईश्वरानुभूति बहुत जरूरी है। आज व्यक्ति कहते कि यदि हमें एक सेकेण्ड के लिए भी शांति हो जाए तो हमारा जीवन धन्य हो जाए, तो वास्तव में शक्ति न आने का कारण परमात्मा से कनेक्शन नहीं। यदि यह नशा रहे कि मैं शांति के सागर का बच्चा हूं तो दुःख ऐसे भाग जाता है, जैसे एक संकल्प में स्वीच ऑन करने से अंधकार भाग जाता है। **जब मैं हूं ही शुद्ध-आत्मा तो अशुद्ध भोजन कैसे स्वीकार करूं। मैं तो हूं ही चेतन देवी।**

जब हमको यह ज्ञान आ जाता, तो सारी शक्ति हमें प्यारे शिवबाबा से प्राप्त हो जाती। लोग कहते आपका यह परमात्मा और आत्मा का ज्ञान जीवन परिवर्तन कर देता? कल भी एक प्रैस रिपोर्टर ने प्रैस सम्मेलन में एक प्रश्न किया, डाकू पंचमसिंह से। हमने ऐसा कभी नहीं सुना कि राजयोग डाकुओं को परिवर्तित कर देता, हमारे विचार से तो आपका परिवर्तन तो जय प्रकाश नारायण ने कराया, आपका इस पर क्या विचार है?

बहुत ही सुन्दर उत्तर पंचमसिंह जी ने दिया "मेरे स्थूल अस्त्र-शस्त्र तो जय-प्रकाश नारायण ने समर्पित कराये, परन्तु आत्मा के विकार तो परमात्मा ने समर्पित कराये, इसलिए मैं दावे से कहता हूं कि योग से परिवर्तन स्थायी काल का होता है।"

लोग कहते—कि ऋषि-मुनि भी भगवान को पा न सके और आपने पा लिया, क्यों आप हमें चक्कर में डाल रहे हो? हम कहते, हम चक्कर में नहीं डाल रहे बल्कि चक्कर से छुड़ा रहे हैं।

अभी कलियुग जा रहा है। साधारण पिता का ज्ञान नहीं, परमात्मा पिता का ज्ञान है। भक्ति का फल मिल रहा है। Season चल रहा है फल का। मुफ्त में मिल रहा है। अतः ईश्वरीय बहन होने के नाते मैं आपको कहूंगी कि **तर्क नहीं बल्कि अनुभवी बनो।** कुछ दिन अनुभव करके देखो। अन्त में इस समय को याद करेंगे। एक बार मुझे शिवबाबा ने एक दृश्य दिखाया था, जिसमें एक प्राप्ति वालों की लाइन और दूसरी पश्चाताप वालों की लाइन दिखायी थी। फिर अन्त में मत कहना, बहन जी ने बताया नहीं। तो बहिन होने के नाते एक बात कहती हूं कि अपने निकट स्थित सेवाकेन्द्र पर जरूर जाना और फिर अनुभव करके देखना।

अतः अन्त में मैं आपसे एक यही सौगात माँगती हूं कि **विकारों को छोड़ो।** ओमशांति

सोनीपत में हुए आध्यात्मिक कार्यक्रम में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० जनक बहिन । मंच पर भ्राता राजिन्द्र सिंह मल्कि, खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री, हरियाणा तथा भ्राता सुजान सिंह, संसद सदस्य विराजमान हैं ।

गोहाटी में ब्र० कु० शीला जी "आसाम ट्रिब्यून दैनिक" के सम्पापक भ्राता सतीश जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ।

बेलगाम में पत्रकार स्नेह मिलन में भाषण करते हुए ब्र० कु० रमेश जी । उनके दाएं भ्राता सोमेश्वर, जिला तथा सत्र न्यायाधीश तथा उनके बाएं में भ्राता मण्णी कट्टी, डिप्टी कमिश्नर विराजमान हैं ।

बेलगाम में आध्यात्मिक कार्यक्रम में ब्र० कु० ई० विश्व विद्यालय का परिचय देती हुई ब्र० कु० ऊषा जी ।

कश्मीरीगेट (देहली) सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित शिवरात्रि महोत्सव के अवसर पर ध्वजारोहण के पश्चात् भ्राता गर्ग जी, ब्र० कु० लीला बहिन तथा अन्य शिव बाबा की याद में ।

"ड्रामा की ढाल"

(ब्र० कु० ज्ञानेश्वर, मधुबन, आबू)

ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर हम यह जान सके कि संसार का खेल एक ड्रामा की तरह है। इस विश्व को ड्रामा की तरह देखने से तथा स्वयं को इस ड्रामा में एक ऐक्टर समझने से हमारे लिए ये जीवन व पुरुषार्थ अति सरल हो गया है। इस ड्रामा के अन्त का जो सर्व सुन्दर दृश्य है—जो कि पुरुषोत्तम संगम युग पर घटित होता है—उसका हमें ज्ञान हो गया और हमारा जीवन उससे जुड़ गया। इस विश्व को एक ड्रामा समझने से पुरुषार्थ में मुख्यतः ४ लाभ होते हैं।

१. आत्माभिमानी स्थिति :—अगर हम यह अभ्यास करते हैं कि इस ड्रामा के हम ऐक्टर-आत्मा हैं और दूसरे मनुष्य भी ऐक्टर आत्माएं हैं तो हमारी आत्मिक वृत्ति व दृष्टि बनी रहती है। हमें ये याद रहता है कि इस ड्रामा में हम ये शरीर रूपी वस्त्र अनेक बार पहनते हैं व उतारते हैं, इससे सहज ही हमें देह से न्यारापन अर्थात् अशरीरी स्थिति का अनुभव होने लगता है।

२. उपराम वृत्ति :—ड्रामा के ज्ञान से हमें पता चला कि इस ड्रामा के पूरा होने में अब थोड़ा ही समय शेष है और शीघ्र ही हमें ये देह रूपी वस्त्र उतारकर वापिस अपने घर जाना है, तो हमारी वृत्ति उपराम हो गई। हम जो इस विश्व में लिप्त होते जा रहे थे, वैरागी बन गये, जब कि अब सब कुछ छोड़कर जाना ही है—तो मोह कैसा ?

३. माया पर विजय :—इस ड्रामा में पार्ट करने के लिए यह शरीर हमें ड्रेस मिली है—किसी को कैसी, किसी को कैसी – तो यह वस्त्र हैं, यह याद रहने से हमें देह का आकर्षण नीरस जान पड़ा और काम महाशत्रु को जीतने में हम सफल हुए। इस प्रकार अपने को पार्ट खेलने वाले समझने से हम माया जीत बन जाते हैं।

४. अडोल स्थिति :—हमें यह ज्ञान हुआ कि यह ड्रामा बना बनाया है जैसा कि हर ड्रामा पूर्व निश्चित होता है। हर ऐक्टर को पहले से ही उसका पार्ट मिला हुआ है। जिसको जो पार्ट मिला है—वह ऐक्टर वही तो पार्ट बजाएगा। यह महसूस होने पर हमारी स्थिति अडोल रहने लगती है। हमारे मन में यह प्रश्न नहीं उठते कि फलाना मनुष्य ऐसा क्यों कर रहा है।

इस प्रकार यदि पुरुषार्थी सदा यह याद रखे कि यह विश्व एक नाटक है तथा सर्व आत्माएं इसके ऐक्टर हैं तो स्थिति सदा योग-युक्त, निश्चल व निर्मल रहे।

सच्चा जीवन

(ब्र० कु० अरविन्द, मोदी नगर)

सच्चा जीवन योगी जीवन।
इससे अच्छा और न जीवन।
लौकिक सुखों को त्याग करो।
आत्मिक स्वरूप को याद करो।
देह भान से बिगड़ता जीवन।
उनकी याद से बनता जीवन।
विकारी वृत्ति से बचा करो।
आत्मिक दृष्टि से देखा करो।
संगम युग का एक है जीवन।
कल्प में फिर न मिलता यह जीवन।
नित ज्ञान अमृत पिया करो।
विकारों को दूर किया करो।
इनका जीवन, उनका जीवन।
पुरुषार्थ हेतु मिला यह जीवन।
मामेकम् याद किया करो।
स्वर्गिक सुख का भान करो।
दिव्य गुणों से भरपूर जीवन।
कहलाता है योगी जीवन।

"अनासक्त-स्नेह"

—ब्रह्माकुमार सुभाष, उज्जैन—

'अनासक्त' और 'स्नेह', कैसी विचित्र स्थिति का आभास दिलाता है। दो विरोधी स्थितियाँ हैं। मानो नदी के किनारे हैं, चुम्बक के दो ध्रुव हैं। अनासक्ति से अभिप्राय पत्थर हृदय व हृदयहीन समझते हैं परन्तु जितना अनासक्त व्यक्ति उतना ही करुणामय, स्नेही और सहयोगी होता है।

अनासक्त और स्नेह कैसे सम्भव हो सकता है? किसी व्यक्ति, वैभव, वस्तु के प्रति लगाव, आकर्षण, आसक्ति उत्पन्न होने पर ही उसके प्रति स्नेह पैदा होता है। इसी स्नेह का बढ़ा हुआ स्वरूप 'मोह' हो जाता है। इसी मोह के वशीभूत दुःख उत्पन्न होता है।

जिस प्रकार हर व्यक्ति शान्ति और सुख की चाहना रखता है उसी प्रकार स्नेह की ललक अन्तर्मन में निहित रहती है। परन्तु वर्तमान समय में, मनुष्य एक-दो को यही कहते हुए मिलते हैं कि आपस में 'प्रेमभाव' होना चाहिए। अरे! आपको स्नेह है तो मैं मिलने चला आया और फिर वही व्यक्ति बाहर जाकर उसी स्नेही की निन्दा भी प्यार से करता रहता है यही उसके प्यार का प्रतीक है।

आज का मानव स्नेह के अभाव में जी रहा है। जहां स्नेह है भी तो वहां अप्रत्यक्ष रूप में स्वार्थ ही होगा। स्वार्थ रूपी प्रीति की डोरी से एक दो से बंधे हुए हैं। स्वार्थ पूर्ति की डोरी ढीली पड़ी कि—सारा सपना टूट जाता है, प्यार रूपी दर्पण में दरारें पड़ जाती हैं। फिर जिससे प्यार था उसी के अवगुण, कमियां, कमज़ोरियां नज़र आने लगती हैं, प्यार मर जाता है। इसको कहते हैं आसक्ति वाला प्यार, जबरजस्ती का बंधन, काम चलाऊ प्यार, कलियुगी प्यार।

देह के सम्बन्धों के आधार से स्नेह की अलग-अलग परिभाषा हो जाती है। हर परिस्थिति में, सम्बन्धों के अनुसार स्नेह विभक्त हो जाता है। मां का, पिता का, भाई-बहिन का, पत्नी का, अध्यापक, मित्र का स्नेह जैसा सम्बन्ध वैसा ही स्नेह का स्वरूप होता है। स्नेह के सम्बन्ध के बावजूद भी कटुता क्यों पैदा हो जाती है? कहने का तात्पर्य यह है कि दुनिया वाले स्नेह को समझे ही नहीं हैं, जिसमें कि अनासक्त स्नेह तो बहुत दूर की बात है। बहुधा माताएं बच्चों से इतना स्नेह रखती हैं कि स्नेह रोजमर्रा की बात हो जाती है और बच्चे स्नेह के वशीभूत बिगड़ते चले जाते हैं। अगर माताएं बच्चों को स्नेह भी दें, साथ ही उनसे विरक्त रहने का अभ्यास करें तो बच्चे भी निर्भीक और स्वावलम्बी शीघ्र ही बन सकते हैं। ऐसा स्नेह किसी भी काम का नहीं जिससे बच्चों की प्रगति रुकती हो। माता-पिता बच्चों से, पति-पत्नी आपस में कितनी रग जोड़ लेते हैं कि यदि दुर्भाग्य से बच्चों की, या पति-पत्नी में से किसी एक की भी अकाले मृत्यु हो जाय तो उनके लिए 'जीवन-प्रकाश' ही चला जाता है।

जिन्दगी एक सफर है—जिसका स्टेशन आ जायेगा, उतरकर एकदम चल देगा। इसलिए स्नेह के पर्दे में, हमें मोह पैदा नहीं करना चाहिए। बाबा कहते हैं अगर किसी से दिल लगाया तो रोना पड़ेगा, उनसे ही पूछकर पता लगा सकते हैं कि जिन्होंने किसी से भी दिल लगाया तो उन पर क्या गुजरी?

यह तो निश्चित है कि इंसान का इंसान से सम्बन्ध है, अटूट रिश्ता है, मनुष्य मनुष्य से ही प्यार करता है और उसकी उपेक्षा भी करता है। मनुष्यों को स्नेह की प्राप्ति मनुष्यों से ही होती है

चाहे वो पशुओं को अपने निहित स्वार्थ के लिए पालता है, प्यार भी करता है फिर भी पशु का प्यार मौन और संज्ञाहीन, बोधहीन रहेगा। हमारा प्यार सीमित नहीं होकर विस्तृत होना चाहिए। जैसे बाबा है बिन्दी लेकिन प्यार का सागर है, स्नेह की असीम लहरों से लहराता हुआ है, ऐसे ही हम भी बेहद के स्नेही बनें। देह का स्नेही नहीं, आत्मिक स्नेही। दुनिया वाले गाते भी हैं 'मुझे' तुमसे प्यार है—परन्तु किससे प्यार है ? देह से या आत्मा से। यदि प्यार है तो फिर घर में बैठो, खुशी में रहो, घूमो, फिरो परन्तु घर छोडकर भाग जाना, कोर्ट मैरिज करना, प्यार के पीछे (दह का प्यार) आत्म हत्या करना—क्या ये प्यार के प्रमाण हैं ? आश्चर्य है कि 'स्नेह' के स्वरूप और सम्बन्ध की हत्या कर दी गई है। विद्यालयों में 'स्नेह सम्मेलन' होते हैं, कहीं भी स्नेह की प्रतिक्रिया भासित नहीं होती है हरेक अपने को श्रेष्ठ प्रदर्शित करने के अन्तः और बाह्य प्रयत्नों में व्यस्त रहते हैं। वास्तव में स्नेह और वह भी आत्मिक स्नेह प्राणीमात्र में तभी पैदा हो सकता है जबकि मनुष्य आत्मा अपने को और परमात्मा को पहचाने। परमात्मा से प्यार के सम्बन्ध अर्थात् जब आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध हो तभी समझ सकते हैं कि आत्मिक स्नेह क्या है ?

अनासक्त स्नेही— अनासक्ति का अभिप्राय निष्क्रियता और अकर्मण्यता से नहीं है। आज अनासक्ति नहीं है इसीलिए देह का प्यार ही रह गया है। देह का प्यार अर्थात् विकारों से प्यार और और विकारों से प्यार अर्थात् भूतों से, कांटों से प्यार। अनासक्त स्नेही तो भावशून्य हो नहीं सकता वह तो सम्पूर्ण भावनायुक्त भावुक होगा।

बाबा हमें अनासक्त बना रहे हैं। बाबा की शिक्षाओं में, पहली शिक्षा ही बहुत बड़ा अनासक्त बना देती है। 'देही अभिमानी बनो।' यह प्रथम पाठ ही 'अनासक्त' बनने का मूल सूत्र है। जैसे-जैसे 'देही अभिमानी' का पाठ पक्का होता जाता, वैसे-वैसे अनासक्ति का गुण अन्दर भरता जाता है। मैं हूं ही—स्नेही आत्मा—मैं स्नेह लुटाने आया हूं, कोई मुझे स्नेह दे या ना दे, मैं प्यार के सागर की सन्तान हूं मुझे स्नेह बांटना है—ऐसा भाव समावेश हो जाय तो 'आत्मिक स्नेह' के वायब्रेशन स्वतः ही चारों ओर विस्फूरित होते जायेंगे। यूं तो जैन धर्म में भी अनासक्त और अपरिग्रह का सिद्धान्त मूल है फिर भी हम उनको अनासक्त नहीं कहेंगे, वे त्यागी हैं परन्तु अनासक्त नहीं। अनासक्त तो सिर्फ 'राजयोगी' ही हो सकते हैं क्योंकि राजयोगी गृहस्थ में रहता है, वस्तु और संसार में रहता है। इसीलिए चरित्रवान भी वही है जो अनासक्त है। अनासक्त स्नेही की बुद्धि में अपना 'विश्व कल्याणकारी स्वरूप' सदा स्मृति में रहता है। विश्व की सेवा का संकल्प स्वतः ही विकसित रहता है। अनासक्त स्नेही सबको स्नेह की दृष्टि से देखते हुए, रहम-दिल बन सेवा में तल्लीन रहता है। अनासक्त स्नेही की नज़र में सारा विश्व ही उसका होता है। 'मैं' और 'मेरे' रूपी घरौंदे से निकल सारा विश्व ही उसका है, सारे विश्व का कल्याण और सारी मनुष्यात्माओं को राह दिखाना है, इसी धुन में जागता, चलता-फिरता और सोता है।

ब्रह्मा बाबा के समान दुनिया में कोई भी ऐसी अनासक्त स्नेही की मिसाल नहीं है। बाबा के चरित्र से सहज ही यह पुष्टि हो जाती है कि वे 'कमल समान' बन गए हैं। 'कमल समान' अर्थात् अनासक्त। हरेक बच्चे प्रति स्नेह का असीम सागर उनकी आंखों में हिलोरें भरता था, अभी-अभी स्नेही रूप और पल भर बाद अनासक्त। ऊँच दृष्टि से सदैव बच्चों को देखते थे—कहीं भी अपनेपन का भान नहीं—सभी शिव बाबा के बच्चे आत्मा-आत्मा भाई-भाई हैं ऐसी उनकी व्यावहारिक धारणा थी। ऐसा 'अनासक्त स्नेही' हम भी बनें तभी बाप के सच्चे सपूत कहला सकेंगे।

जो 'अनासक्त स्नेही' बन गया वह सदा स्नेह के सागर बाप की मधुर स्मृतियों की लहरों में लहराता रहेगा।

परमात्मा धर्म स्थापना का कार्य माताओं द्वारा कराते हैं—क्यों ?

(लेखक० व्ही जे० वराड पांडे, बिलासपुर, म० प्र०)

कलियुग के अन्त और सतयुग के आरम्भ का संधि समय पुरुषोत्तम संगमयुग है जबकि परम-पिता परमात्मा इस सष्टि में आकर माताओं, कन्याओं को ज्ञानामृत का कलश अथवा कुंभ देते हैं। वे माताएँ, कन्यायें ही ज्ञान गंगा, ज्ञान यमुना और ज्ञान सरस्वती बनकर भारत के नर नारियों को ज्ञान जल अथवा ज्ञानामृत द्वारा पतित से पावन बनाने का कर्त्तव्य करती हैं। उसी की याद में गंगा, यमुना, गुप्त सरस्वती नदी के संगम पर आज तक लोग कुम्भ का मेला मनाते आते हैं। यह बात भी प्रसिद्ध है कि गीता के भगवान अनेक माताओं और कन्याओं को जरासन्ध इत्यादि की जेलों से मुक्त कराके अतीन्द्रिय सुख प्रदान किया। यही भारत मातायें, शक्तियाँ अथवा गोपियां ही प्रमुख रूप से भगवान द्वारा धर्म स्थापना करने में योग दान देती हैं। अतः भगवान, धर्म ग्लानि के समय अवतरित होकर माताओं कन्याओं द्वारा ही धर्म स्थापना का कार्य कराके माता गुरु की प्रथा चलाते हैं। मनुष्य अथवा धर्म स्थापक स्त्रियों को माया का रूप मानते हैं और उनको छोड़कर जंगल में भाग जाते हैं और पति को ही स्त्रियों का गुरु बताते हैं। किन्तु एक परमात्मा ही है जो कि माताओं, कन्याओं को सहज ज्ञान देकर उनके जीवन को ऊँचा उठाते हैं। यह बात वर्तमान समय में पुनरावृत्त हो रही है जोकि हर कोई देख और जान सकता। है इसलिये प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय जिसकी स्थापना स्वयं परम पिता परमात्मा ने की है, इस विद्यालय में ब्रह्माकुमारियाँ परमात्मा का ज्ञान देती हैं जो कि ज्ञान गंगाएँ कहलाती हैं क्योंकि ज्ञानामृत का कलश परमात्मा ने उन्हें ही दिया है।

मनु जिसे कुछ लोग नारी का तिरस्कार करने का दोषी ठहराते हैं उनको भी यह मानना पड़ा कि वह देश जहां नारी पुज्या की दृष्टि से देखी जाती है वहां देवता लोग भी खुशी से विचरण करते हैं। नारी जाति जो एक दीर्घ काल तक विश्व के भारत तथा इतिहास में गिरी हुई निगाह से देखी जाती थी उसको पूरा सम्मान मिलना चाहिए यही इस संस्था के संस्थापक की शिक्षा है। महिलाओं में कुछ ऐसे स्वाभाविक गुण होते हैं जो विश्व कल्याण और धर्म स्थापना जैसे क्रान्ति-कारी कार्य को कार्यान्वित करने और आगे बढ़ाने में सहयोगी होते हैं, इसीलिए परमात्मा ने माताओं को इस कार्य के लिए निमित्त बनाया है। यद्यपि पुरुष भी काफी संख्या में इस कार्य में लगे हुए हैं।

शास्त्रों में शिव शक्तियों का वर्णन है जो शिव द्वारा प्रगट हुई थी और जिन्होंने शिव से शक्तियों का वरदान पाकर असुरों का संहार करके पृथ्वी का भार हल्का किया था परन्तु वे शक्तियाँ किस काल में थी और उसके बाद सृष्टि का क्या हुआ यह बात सदा शास्त्रवादियों की खोज का ही विषय रहा। अब समय चक्र पुनरावृत्त होकर वहीं पहुंचा है जबकि पृथ्वी असुरों के भार से कराह उठी है। अब से ठीक ५००० वर्ष पूर्व ही परमात्मा शिव ने भारत में आकर नारियों को शिव शक्ति बनाकर विश्व का उत्थान कराया था, अब पुनः वही समय है कि परमात्मा शिव ने पुनः नारी को शक्ति स्वरूप प्रदान किया है। ★

"महाशिवरात्रि"

(यह नाटक विश्व शान्ति महासम्मेलन में किया गया था)

गीत-संवाद लेखक—ब्र० कु० मोहन, अमृतसर

कथा सार—

एक था बहादुरसिंह राजा, जिसे थी प्रभु मिलन की अभिलाषा, उसी आश को पूर्ण करने के लिए वह चल पड़ा मन्दिरों में, कंदराओं, में झाड़ों में, पहाड़ों में, संतों के पास, मंहतो के पास, यह सोचकर कि मुझे परमात्मा मिल जाए। तो क्या उसके मन की आश पूर्ण हुई ? क्या यह सिर्फ उसके मन की आश थी या आप सबकी भी वही आश है ? तो आइये इस नृत्य नाटक द्वारा उस रहस्य को जानने का प्रयत्न करें।

पात्र :—१. राजा बहादुर सिंह २. मंत्री खुशामत सिंह और जोरावर सिंह ३. हिरनी और उसके चार बच्चे ४. शिकारी ५. पुजारी ६. चार साधु भंग पीने वाले ७. कुछ नृत्य करने वाले ८. एक ब्रह्माकुमारी।

प्रथम दृश्य (राजा और मंत्रियों का प्रवेश)

राजा : खुशामतसिंह, आज तो महाशिवरात्रि का मंगल पर्व है।

खुशामतसिंह : जी महाराज।

राजा : तो इस पवित्र पर्व के लिए हमारे यहाँ क्या-क्या तैयारियाँ हुई हैं ?

जोरावर : महाराज आज के शुभ पर्व के लिए राजनृतकियों ने शिव महिमा पर आधारित एक बहुत ही सुन्दर नृत्य की रचना की है। आपकी आज्ञा हो तो नृत्य दिखाया जाए।

राजा : हाँ ! हाँ ! क्यों नहीं।

(गीत और नृत्य)

शिव तुम सर्वेश्वर ओम परमेश्वर
महिमा तेरी हम गायें

(१) करते स्थापन, करते पालन
तुम्हीं विनाश कराते
नर्क समान जगत को तुम ही
स्वर्ग समान बनाते
जिस पे हो जाए कृपा आपकी (२)
वो देवता कहलाये
शिव तुम.....

(२) अखंड ज्योति तुम अनादि
गुण अविनाशी तेरे
सर्व के दुःख हरने वाले
जग गायें गुण तेरे
त्रिकालदर्शी तू कहलाता
ज्ञान सभी समझाए
शिव तुम सर्वेश्वर।

(नृत्य के बाद राजा नृतकियों को कुछ पुरस्कार देते हैं।)

राजा : खुशामतसिंह नृत्य देखकर तो हमें बहुत प्रसन्नता हुई। इसमें शिव भगवान की महिमा का कितना सुन्दर वर्णन किया है। क्या हम भी कभी उस भगवान को पा सकते हैं। जान सकते हैं कि वह कहाँ हैं ?

खुशामतसिंह : महाराज, आज तो दिन ही शिव की महिमा का है। आज के दिन जगह जगह भिन्न-भिन्न प्रकार से इस पर्व को मनाया जाता है।

राजा : अच्छा, तो क्यों न हम भी चलकर देखें।

खुशामत : जरूर-जरूर महाराज, वहाँ जाने से आपकी जो इच्छा है, कि शिव परमात्मा कौन है तथा यह शिवरात्रि क्यों मनाई जाती है, यह जानने को वह मिलेगा, इच्छा पूर्ण होगी।

जोरावरसिंह : क्षमा करें महाराज, जायेंगे जरूर, किन्तु आप गुप्तवेष में चलें तो अच्छा रहेगा।

राजा : ठीक है, ठीक है जोरावर, कभी-कभी तू भी समझ की बात कर देता है।

(जोरावर खुश हो जाता है।)

(प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

(राजा और दोनों मंत्री शिव मन्दिर में जाते हैं, जहाँ भंग का गीत चल रहा है।)

"गीत भंग का"

"बोलो शिव शंकर भोलेनाथ की जय
बोलो जी डमरू वाले की जय
पियो पियो पियो भंग पियो
शिव जी का ये प्रसाद लियो

बोलो—बम बम भोले की जय।
भंग पियो जी भंग, भंग पियो जी भंग
यह है बूटी भोलेनाथ की, जिसके अनोखे रंग
पियोजी भंग·····
अरे ! शिव जी की यही है बूटी दुख दर्द मिटाये,
जो पी लेता यह बूटी, स्वर्ग लोक को पाये,
अरे ! तुम भी पीकर मस्ती पाओ २ मिलेगा
शिव का संग; पियो जी भंग··· ··
अरे ! बहुत स्वाद है इसका भैया (२)
सोमरस लागे, अरे ! पीकर इस बूटी को,
शिव जी नाचे पीछे आगे
अरे तुम भी पीलो एक कटोरा (२)
रह जाओगे दंग, पियो जी, भंग ·····

(गीत के समय भंग का प्रसाद खुशामतसिंह और जोरावरसिंह को मिलता है और खुशामतसिंह को भंग बहुत चढ़ जाती है। राजा दूसरे भक्तों से मिलता है और खुशामतसिंह और मंत्री आपस में बात करते हैं।)

खुशामतसिंह : (नशे में) अरे खुशामत अब कौन से मन्दिर में जाना है।

(जोरावर हैरान होता हुआ)

जोरावर : खुशामत, मुझे, अरे खुशामत तू है कि मैं ?

खुशामत : तू, तू, तू मैं तो हूँ राजा बहादुरसिंह

(हाथ से लड़ाई की एक्शन करते हुए)

राजा : क्या हो रहा है खुशामत ?

खुशामत : (नशे में नीचे देखता हुआ) कौन है रे ? सुना नहीं! सलाम भरो, राजा बहादुरसिंह को सलाम नहीं भरता ?

(राजा थप्पड़ मारता है। खुशामत चार उल्टी बाजी खाता है)

राजा : जोरावर, इसको तो भांग बरोबर चढ़ गई है।

(खुशामत तब तक उठ जाता है और कांपता हुआ बोलता है)

खुशामत : उतर गई सरकार, उतर गई।

राजा : चुप (जोरावर की ओर देखते हुए) कहो अब कहाँ चलना है ?

जोरावर : महाराज, यहाँ से थोड़े ही दूरी पर शिव जी का एक बहुत पुराना मन्दिर है। वहाँ के पुजारी बहुत ही अच्छी कथा सुनाते हैं।

राजा : अच्छा, तो वहाँ ही चलते हैं। शायद वहाँ प्रभु मिलन की प्यास मिट जाए।

(दृश्य समाप्त)

तीसरा दृश्य

पुजारी : (श्लोक गा रहा है) हे चन्द्रचूड·····

प्रिय भक्तजनो, आप सभी जानते ही हो कि आज महाशिवरात्रि का महान पर्व है। इसी पर्व के रहस्य को स्पष्ट करने के लिए हम आपको एक बहुत ही सुन्दर कथा सुनाते हैं।

"कथा"

एक समय की बात है, जबकि एक शिकारी जंगल में शिकार करने चला।

(दृश्य —हिरण, हिरनी और शिकारी का)

गीत—

एक शिकारी चला जंगल में (२)
सारा दिन वो रहा भटकता, उसे न कोई शिकार मिला (२)
भूखा प्यासा तड़प तड़पकर क्रोध भरा वो भड़क रहा था·· ···

(हिरनी का प्रवेश)

इतने में कुछ दिया दिखाई (२)
शिकारी के मन में आशा आई
हिरनी थी वह मस्त सुहानी (२)
उसकी चाल बड़ी मनभानी
झट से शिकारी ने की तैयारी,
मारने चला वो हिरनी प्यारी
देख शिकारी को हिरनी भागी,
थर थर कांपे वो बेचारी ॥

हिरनी बोली

अब क्या होगा मेरे जीवन का,
यह निर्दयी अब ना छोड़ेगा"
आँसू बहाये खड़ी खड़ी,
जा के शिकारी के पांव पड़ी।

खुशामतसिंह : तो फिर क्या हुआ पुजारी जी ?

पुजारी : फिर हिरनी ने एक बिनती की उसको,
हे शिकारी मार ना तू मुझको (२)

शिकारी : मारूं ना अगर तुझे तो कैसे मैं जीऊँगा,
तुझको मारे बिना अपने बच्चों को क्या दूंगा। (२)
मारूँगा तुझे जरूर क्योंकि मैं हूँ मजबूर·····

हिरनी : मरने से मुझे कोई डर नहीं,
मेरे बच्चों को मेरी खबर नहीं (२)
मेरी एक बिनती तू मान ले,
मिलने बच्चों को जाने दे
बस एक बार उन्हें गले लगाऊँ,
माँ की ममता देकर आऊँ,
जाने दे मुझे जाने दे·····(२)
फिर लौट के तेरे पास आऊँगी,
वादा करती हूँ जो निभाऊँगी
जाने दे घर जाने दे मुझे जाने दे ···

पुजारी : माँ की ममता ने जादू लगाया,
निर्दयी के हृदय को पिघलाया (२)

शिकारी : मान लेता हूँ तेरी बात,
पर वादा अपना रखना याद
अगर ना आई वापस तो,
तेरा खानदान होगा बरबाद·····(२)

पुजारी : मिलने चली अपने बच्चों को,
हिरनी भोली भाली (२)

इस प्रकार हिरनी अपने बच्चों को मिलने चल दी किन्तु यहाँ शिकारी ने सोचा इस जंगल में रात के समय भयानक प्राणियों से बचने के लिए मुझे वो सामने वाले बेलपत्र के वृक्ष पर रात गुजारनी चाहिए। यह सोच वो वृक्ष पर चढ़ गया। (और दूसरी ओर) हिरनी के बच्चे आपस में खेल रहे थे।

गीत—

नन्हें मुन्ने भोले भाले, हिरनी के बच्चे (२)
नाचें कूदें भोले भाले हिरनी के बच्चे (२)
माँ तू आई, कहाँ गई थी, काहे देर लगाई (२)
लगता है हमारे लिए तू चीज अनोखी लाई (२)
झटपट तू दे दे मैया वरना हम नहीं हैं कच्चे (२)
नन्हे मुन्ने भोले भाले, हिरनी के बच्चे, (२)
नाचें कूदें भोले भाले हिरनी के बच्चे। (२)

हिरनी : बच्चो तुम्हें कैसे समझाऊँ,
क्या लाई कैसे बतलाऊँ
मिल लो माँ को आखरी बार,
जाना है मुझे मौत के द्वार (२)
मौत के द्वार, मौत के द्वार·····

बच्चे : मौत के द्वार, मौत के द्वार,
माँ, कौन तुझे मारेगा ?
हम तुझे हरगिज नहीं मरने देंगे,
तेरे मरने से पहले हम मरेंगे।

माँ-हिरनी : शान्ति रखो बच्चो,
शान्ति रखो धीरज धरो,
मैंने एक शिकारी से किया वादा है,
समय नहीं अब ज्यादा है
बस जल्दी ही मुझे जाना है।

बच्चे : तो माँ सुन ले, तू जाती है जहां,
हम भी आयेंगे वहाँ
जियेंगे तो एकसाथ, मरेंगे तो एक साथ,
चलो माँ हम भी चलेंगे साथ-साथ
(हिरनी और बच्चे चल पड़े)

हिरनी और बच्चे : ऐ शिकारी तू है कहाँ,
वायदा निभाने हम आई यहाँ,
मार ले हम सबको एक साथ,
मिटा ले अपनी भूख प्यास।

पुजारी : वहाँ हुआ एक चमत्कार,
ऊपर से की शिव ने पुकार
इन प्राणियों को मत मार,
इसी में है तेरा उद्धार (२)

मंत्री-खुशामत : फिर क्या हुआ पुजारी जी ?

पुजारी : भक्तजनो, असल में बात यह थी कि जिस बेलपत्र के वृक्ष पर रात भर जागता हुआ शिकारी पत्ते तोड़ तोड़कर नीचे फेंकता रहा वो पत्ते अनजानपन में वृक्ष के नीचे जो पवित्र शिवलिंग था उस पर गिरते रहे। और वो रात्रि वैसे भी शिवरात्रि थी। अनजानपन में शिकारी से जागरण और उपवास हो गया। जिसके कारण भगवान शिव शिकारी पर प्रसन्न हुए और उसका उद्धार किया।

"बोलो शिव भोलेनाथ की जय, शिवबाबा की जय"

(पुजारी और भक्तों का प्रस्थान)

राजा : खुशामतसिंह, ये शिकारी और हिरणी की कहानी द्वारा महाशिवरात्रि का रहस्य स्पष्ट नहीं हुआ। क्योंकि इस कथा में तो पहले से ही शिवरात्रि लोग मनाते थे ये बताया गया। हम तो जानना यह चाहते हैं कि शिवरात्रि पर्व का प्रारम्भ आदि का सच्चा रहस्य क्या है ?

खुशामतसिंह : महाराज, यह सब गुह्य बातें हैं। यह

जानने के लिए और भी एक जगह है।
राजा : वह कौन सी जगह है ?
खुशामतसिंह : वह है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, जहाँ हर वर्ष महाशिवरात्रि मनाई जाती है।
राजा : तो चलो फिर वहाँ दर्शन करने चलें।

(दृश्य समाप्त)

(चौथा दृश्य) (ब्रह्माकुमारी आश्रम)
खुशामतसिंह : महाराज, ये जो सामने दिखाई दे रहा है, यही तो है वह प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय।
राजा : अच्छा, तो इसका मतलब यह हुआ कि हम उस पवित्र स्थान के पास पहुँच गये, जिसकी तुम महिमा सुना रहे थे।
जोरावर : जी हां महाराज ! ये वही महान तीर्थ-स्थान है।

(राजा और मंत्री गेट के अन्दर प्रवेश करते हैं)

राजा : कितना शान्त वातावरण है। कितनी पवित्र भूमि है। यहाँ तो मुझे कण २ में पवित्रता की किरणें नज़र आ रही हैं।
खुशामतसिंह : हाँ ! महाराज मुझे भी ऐसा ही अनुभव हो रहा है।
जोरावर : हाँ महाराज, मुझे भी यहां परम शान्ति मिल रही है।

(सामने से ब्रह्माकुमारी आती है और स्वागत करती है)

ब्रह्माकुमारी : आइये भगवान के घर में स्वागत है आपका।
राजा : भगवान के घर में हमारा अहो सौभाग्य।
ब्रह्माकुमारी : आइये आपको आश्रम दिखायें। जिसमें भगवान स्वयं आकर अपना कार्य करते हैं, और उसी परमपिता परमात्मा शिव की हम सच्ची शिवरात्रि मना रहे हैं।
राजा : उसी शिवरात्रि के रहस्य को हम जानना चाहते हैं।

(मंत्री—बीच में ही)

खुशामतसिंह : और मैं भी एक रहस्य आप को स्पष्ट कर दूँ, बहन जी वास्तव में आप जिनसे बात कर रहे हैं वे हैं महाराजा बहादुरसिंह जी।

(खुशामत राजा की शाल उतार देता है)

ब्रह्माकुमारी : अच्छा·····ये तो और भी खुशी की बात है, आप जैसे महानुभाव शिवरात्रि की सच्ची महिमा जानने के लिए यहाँ पधारे हैं। इससे आज के महोत्सव की शोभा और भी बढ़ जायेगी। आइये, आइये, मैं आपको बताती हूँ कि शिव रात्रि इसलिए मनाई जाती है, क्योंकि परमपिता शिव परमात्मा कलियुग की घोर रात्रि में आते हैं और कलियुग को सतयुगी दिन बनाते हैं, वही शिव परमात्मा अभी पुरुषोत्तम संगमयुग के समय आकर अपना कार्य कर रहे हैं।

(राजा आश्चर्य से·····)

राजा : तो क्या परमात्मा इस धरती पर आ चुके हैं ?
ब्रह्माकुमारी : हाँ ! यह बात है सन् १९३७ की जब धरती पर रहने वाली हर आत्मा के मन की पुकार आकाश से भी पार, परमधाम में रहने वाले परमपिता परमात्मा शिव को धरती की ओर खींचने लगी। युगों से बिछुड़ी आत्मायें भिन्न २ प्रकार से प्रभु का आह्वान कर रही थीं।
आकाशवाणी :—

यदा-यदाहि धर्मस्य, ग्लानिभवति भारत,
अभ्युत्थानम् धर्मस्य·····

ब्रह्माकमारी : तड़पते सीनों की आवाज भगवान तक पहुँच गई थी। परमपिता अपने बच्चों की प्यास बुझाने धरा पर अवतरित हुए। वही शिव जो दुखों से छुड़ाते हैं, विकारों से मुक्त करते हैं। पतितों को पावन बनाते हैं।

गीत

वही शिव परमपिता सबके
जिसे सब कहते हैं निराकार.....

(यहां राजा को साक्षात्कार का अनुभव हुआ)

राजा : अहा ! कितना सुन्दर अलौकिक अनुभव। आज तो मैं धन्य धन्य हो गया। मैंने शिवरात्रि का सच्चा रहस्य समझा, सच ! सच ! शिवरात्रि माना परमपिता परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण का पर्व।
हे परमात्मा ! आज मैंने आपको पाया।
ब्रह्माकुमारी : आपने अभी परमात्मा के परिचय का ज्ञान तो पाया किन्तु उसी से योग कैसे लगाना चाहिए वह बात हम समझें। योग माना याद। आत्म स्वरूप

में स्थित होकर बुद्धि बल द्वारा परमपिता परमात्मा शिवबाबा को याद करना। आइये हम सभी बैठकर उसी परमात्मा को याद करें।

गीत—"बाबा के संग जाना……

बाबा के संग जाना, वो घर अपना सुहाना
है वो घरअपना सुहाना, प्यारे प्यारे बाबा के
संग जाना

(१) रहते वहां पे आत्मा सितारे
बीच में चमके बाबा हमारे
मिलेंगे आकर आपसे बाबा
वादा किया वो निभाना…हमको
वो घर……मीठे मीठे

(२) गुणों का सागर
बाबा प्यारा
बाबा में संसार हमारा
अब तो मन में एक ही आशा
बाबा से दूर ना जाना हमको
वो घर……मीठे मीठे

(३) बाबा मन यह गाये
बाबा बिना अब कुछ नहीं भाये
उसके हम और वो है हमारा
उसे ना कभी भुलाना…हमको
वो घर……मीठे मीठे

❋

(कर्मों का फल किसके नियन्त्रण में ?—पृष्ठ ८ का शेष)

रूप से ही होता रहता है।

इस तरह यह स्पष्ट है कि मनुष्यों को जो शुभाशुभ कर्मों के फल की प्राप्ति होती है उसका देने वाला या रचना करने वाला परमपिता परमात्मा नहीं है।

(३) **क्या विधि, विधान या ड्रामा फलदाता है ?**

उपरोक्त दोनों मतों को अमान्य करने के पश्चात हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि संसार में कर्म करने के फलस्वरूप जो कुछ भी फल की प्राप्ति हो रही है वह एक बने बनाये प्राकृतिक विधान के अनुसार हो रही है जिसे हम ज्ञान की भाषा में कहते हैं कि फल की प्राप्ति एक बने बनाये ड्रामा या विधि के अनुसार हो रही है और हम सब आत्माएँ इस संसार रूपी रंग मंच पर पार्टधारी हैं, जो हममें से प्रत्येक को मिले हुए पार्ट के अनुसार अपना भिन्न-भिन्न पार्ट बजाते रहते हैं और फल प्राप्त करते रहते हैं।

हम कहते हैं कि एक अपराधी को मजिस्ट्रेट ने सजा दी लेकिन वास्तव में सजा देने वाला मजिस्ट्रेट नहीं बल्कि देश का कानून है। मजिस्ट्रेट तो सजा देने में केवल निमित्त मात्र है। कहा जाता है कि देश का शासन राष्ट्रपति या मंत्रीगण चलाते हैं लेकिन वास्तव में शासन चलाने वाला देश का विधान है। राष्ट्रपति या मंत्रीगण तो केवल निमित्त मात्र हैं। इसी तरह हम कह देते हैं कि संसार में जो कुछ हो रहा है वह सब भगवान कर रहे हैं लेकिन वास्तव में एक बना बनाया अनादि विधान है जिसके अनुसार सब कार्य होते रहते हैं। सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र आदि भी सब एक बने बनाये विधान के अनुसार गतिशील एवं क्रियाशील हैं। यहाँ तक कि जैसे राष्ट्रपति एक विधान से बँधे हुए हैं, वैसे ही स्वयं परमात्मा भी इस अनादि विधान या ड्रामा से बन्धे हुए हैं। संत तुलसीदास भी रामचरित मानस में कहते हैं :…

होनहार भावी प्रबल, बिलख कहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभ, जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ॥

अत: हम इसी परिणाम पर पहुँचते हैं कि संसार में जो कुछ फल की प्राप्ति की जा रही है या कराई जा रही है, वह सब एक बने बनाये अनादि अविनाशी विधान या ड्रामा के अनुसार हो रही है।

❋

केवल शिव बाबा ही निर्गुट हैं (पृष्ठ १ का शेष)
गुट निरपेक्ष शिखर सम्मेलन में भाग लेते रहे हैं और यह जानकर खुशी हुई कि ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय ने भी दो सप्ताह पूर्व शान्ति सम्मेलन आयोजित किया था। दोनों सम्मेलनों में एक जैसे प्रस्ताव तथा विचार रखे गए" इस पर बोलते हुए उन्होंने कहा, "जब तक शान्ति न होगी, निःशस्त्रीकरण न होगा, हिंसा का अन्त न होगा, हमारी भौतिक प्रगति भी प्रश्नचिन्ह बन जावेगी। ऐसा प्रतीत होता है आपकी संस्था का तथा हमारे निर्गुट आन्दोलन का समान ही लक्ष्य है·····केवल इस संस्था का शान्ति अभियान ही मुझे प्रभावित नहीं करता परन्तु इनकी भाषा और ज्ञान में सर्व धर्मों के लिए सहिष्णुता पाई जाती है जो अन्यत्र मुश्किल से ही देखने में आती है। इनका सन्देश बहुत सहज है।

इस संस्था के जिन भी सदस्यों से मैं मिला हूं उनका अपना स्वयं का व्यवहार है, मानसिक शान्त हैं और स्थिर-बुद्धि हैं। ऐसे ही मेरे एक साथी भ्राता स्टीव नारायण (ग्याना के उप-राष्ट्रपति) हैं। मैं देखता हूं कि स्टीव नारायण मन्त्रियों की सभा में, तनावपूर्ण वातावरण में भी सदा शान्त रहते हैं। कई तो इसी बात पर नाराज़ हो जाते हैं। और उनसे ऐसा लगता है कि वे इन सबसे परे हैं। जब मैं भी योग में बैठता हूं, मुझे शान्ति मिलती है। मैं कोई ब्रह्माकुमारी संस्था का सार्वजनिक सम्बन्ध अधिकारी नहीं हूं परन्तु मैंने देखा है कि कैसे बिना किसी प्रलोभन आदि दिये इस संस्था ने पिछले कई वर्षों से उन्नति की है। संस्था के ग्याना सेवाकेन्द्र के बारे में कहा, "यह सेवा केन्द्र दो वर्ष पूर्व जल गया था। इस प्रकार का मकान यदि कोई १८ मास में भी बना लेता तो वह औलम्पिक मैडल का अधिकारी बनता। परन्तु आश्चर्य है, तीन मास में ही पुनः सेवा केन्द्र का मकान बन गया। मैं चाहता हूं इस संस्था का प्रभाव बढ़ जाता और अन्य सरकारें इस संस्था से निर्माण कुशलता भी सीख सकतीं, यह कोई छोटी-सी मिसाल नहीं है। ऐसा महसूस होता है, ब्रह्माकुमारियां अन्य में उमंग उल्लास पैदा कर सकती हैं, जिससे वे आलसी बने बिना शान्तिप्रिय, साहसी बन जाते हैं।"

अन्त में उनका कहना था, "अब विश्व में अधिक शान्ति तथा तनाव रहित वातावरण चाहिये, भ्रातृत्व चाहिये। अब आपसी सन्देह, अनुमान समाप्त होना चाहिये। अब नया युग आना चाहिये। यही कार्य यह संस्था औरों से मिलकर कर सकती है।"

जोगेश्वरी (बम्बई) में "शान्ति की पुनः प्राप्ति" विषय पर प्रवचन करती हुई ब्र० कु० सुषमा जी।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

११ फरवरी, १९८३ को ४७वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती का पर्व सभी सेवा केन्द्रों पर ध्वजारोहण के साथ बड़े धूमधाम से मनाया गया। बड़ौदा, शोलापुर, जलगांव, विलारी, मुद्दे विहाल, संकेश्वर, गोधरा, जूनागढ़, भैरहवा-पोखरा (नेपाल), वेलगाम, पुरी, चन्द्रपुर, रोहतक, मोरवी, सोनीपत, पठानकोट, गाजियाबाद, मोदीनगर, हजरतगंज (लखनऊ), कोल्हापुर, नयागंज (कानपुर), अम्बाला कैंट, रायगढ़, अमृतसर, गुमला, वर्धा, रुड़की, गोवा, फरीदाबाद, भटिंडा, अमरावती, कोलार, कोसीकलां, त्रिनगर (दिल्ली), पहाड़गंज दिल्ली, रानीबाग (दिल्ली) आदि-२ सेवा केन्द्रों की ओर से इस अवसर पर विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनियां, स्नेह-मिलन, सार्वजनिक कार्यक्रम, प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा प्रोजैक्टर शो के विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनके द्वारा अनेकानेक आत्माओं को शिव पिता का दिव्य सन्देश मिला।

बंगलौर सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि विशेष व्यक्तियों का स्नेह मिलन आयोजित किया गया, जिसमें माऊंट आबू में हुई युनिवर्सल पीस कान्फ्रेंस में भाग लेने वाले विशिष्ट व्यक्तियों ने अपने-२ अनुभव सुनाए। इनमें से भूतपूर्व राष्ट्रपति भ्राता बी० डी० जत्ती जी ने कहा कि मधुबन के अलौलिक वातावरण में जाकर मैं घर की, सम्बन्धियों की तथा कारोबार की सुध-बुध ही भूल गया और ३५०० लोगों के जनसमूह को बिना पुलिस की सहायता के अनुशासनपूर्वक व शान्तिपूर्वक इकट्ठा रहते देख कर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। इनके अनुभवों को सुन कर और भी अनेक आत्माएं बहुत प्रभावित हुईं।

आगरा से समाचार प्राप्त हुआ है कि भ्राता डा० राबर्ट मुलर का आगरा के दर्शनीय स्थान ताजमहल को देखने हेतु पधारने पर भव्य स्वागत किया गया, उनके साथ स्टीव नारायण की धर्मपत्नी तथा जम्मू-काश्मीर सेवा केन्द्रों की शिक्षिका ब्र०कु० शान्ति बहन भी थीं। विजय नगर सेवा केन्द्र पर समाचार पत्रों के संवाद दाताओं, तीन डिप्टी कमिश्नरों, प्रमुख डाक्टरों, तथा व्यापारीगण के साथ डा० मुलर की भेंट वार्त्ता हुई। उन्होंने बहुत ही खुशी से मधुवन के अपने अनुभव सभी को सुनाए और बताया कि गाडफादर ने कहा कि, "चाहे कितनी भी कठिनाई क्यों न हो अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते चलो तथा शान्ति के लिए कार्य करो।" आगरा के भाई-बहनों ने डा० मूलर व श्रीमति बेटी नारायण को सुन्दर ताजमहल सौगात के रूप में दिए।

भोपाल सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि अरेरा कालोनी में ५ सेवा केन्द्रों के भाई-बहन व अनेक विशिष्ट व्यक्तियों का स्नेह मिलन कार्यक्रम रखा गया। भोपाल, ग्वालियर, आगरा, सागर तथा झांसी सेवा केन्द्रों की ओर से लगभग २७ विशिष्ट व्यक्तियों ने माउंट आबू में हुई युनिवर्सल पीस कान्फ्रेंस में भाग लिया। इनमें से कई ने अपने अनुभव सभी के सामने प्रस्तुत किए जिससे और आत्माएं भी बहुत प्रभावित हुई।

ग्वालियर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि मंछड़, लहार, भिण्ड तथा पोरसा में राजयोग सम्मेलन आयोजित किए गए, जिनमें इस इलाके के जाने-पहचाने भ्राता पंचमसिंह का बहुत योगदान रहा। इन सम्मेलनों के द्वारा हजारों की संख्या में आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

कुरुक्षेत्र सेवा केन्द्र की ओर से राजोंद गांव में प्रदर्शनी लगाई गई तथा योग शिविर का भी प्रबन्धक रखा गया था। हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया।

दादरी में विश्व नवनिर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता सुरेश चन्द्र जी द्वारा सम्पन्न हुआ। आस पास के गांवों के लोग तथा वहां की जनता ने आध्यात्मिक लाभ उठाया। लगभग ५० आत्माओं ने योग शिविर किया।

नयागंज (कानपुर) सेवा केन्द्र की ओर से गोला गोकर्ण नाथ चन्देली धर्मशाला तथा हिन्दुस्तान सुगर मिल, दो स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी तीन दिन के लिए लगाई गई। भक्तों तथा सभी वर्गों के कई हजार लोगों ने बड़ी भावना से इस प्रदर्शनी को देखा तथा प्रदर्शनी का समय बढ़ाने के लिए बार-बार आग्रह किया गया परन्तु समय का अभाव होने के कारण ऐसा करने में असमर्थ थे।

मुहम्मदपुर गांव (आगरा के निकट) से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां पर तीन दिन केलिए प्रदर्शनी, योगशिविर, प्रवचन और नाटक का आयोजन किया गया। लगभग ४००० आत्माओं ने इन कार्यक्रमों को देखा। भू० पू० बागी पंचम सिंह ने तथा उनकी बटी रमा ने भी अपने प्रभावशाली अनुभव सुनाए। सासनी उपसेवा-केन्द्र की ओर से एक दिन के किए प्रवचन का सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

सिरसा सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि हनुमान गढ़ में ५ दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिससे ५००-६०० आत्माओं को शिवपिता का दिव्य संदेश मिला। दो बालिका विद्यालयों तथा एक बालिका कालेज में आध्यामिक प्रवचन के कार्यक्रम भी रखे गये, जिनके द्वारा लगभग ८०० बच्चों तथा शिक्षकों ने लाभ प्राप्त किया।

भावनगर सेवाकेन्द्र से समाचार मिला कि बालुकड़ में 'जिला नशाबन्दी सम्मेलन' के अवसर पर चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी, योगशिविर, प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचनों का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिनसे कई हजार लोगों ने लाभ उठाया।

कटक सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि जटनी के पास बाछरा तथा छतिया के पास **कईता स्थान** पर प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनसे लगभग २००० आत्माओं ने लाभ उठाया, जिनमें अनेक बाबा, महंत तथा धर्मों के प्रतिनिधि भी शामिल हैं।

पणजी (गोवा) सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि निकटवर्ती 'नगर गांव' तथा 'ब्रह्मा करमकी' स्थानों पर साप्ताहिक पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके परिणाम स्वरूप लगभग ५० आत्माएं नियमित कलास कर रही हैं।

अलीगढ़ सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि उत्तर काशी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी द्वारा निकटवर्ती गाँवों तथा ८००० फुट की ऊंचाई पर स्थित गांवों की जनता को ईश्वरीय संदेश मिला। यहाँ के प्रशासनिक अधिकारियों ने ऐसी शीत लहर में ज्ञान की लहर फैलाने के लिए संस्था के कार्य की बहुत प्रशंसा की तथा अनेक सुविधाएं उपलब्ध कराईं।

राजकोट सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि जब मधुवन से दादी निर्मलशान्ता जी, रमेश भाई व ऊषा बहिन सौराष्ट्र के सेवा केन्द्रों के दौरे पर आए तो राजकोट स्थित ताजकेटरर्स कान्फ्रेंस हाल में वी० आई० पीज़० का स्नेह मिलन रखा गया, जिसमें सभी वर्गों के विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया।

सूरत सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहाँ पर नए मकान का उद्घाटन दादी जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर विश्व-शान्ति सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें प्रमुख प्रवक्ता दादी जी, ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी तथा द० गु० युनिवर्सिटी के वाइस चांसलर भ्राता ए० आर० देसाई थे।

पटियाला सेवाकेन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि आदि रत्न मिट्ठू दादी जी के पुरातन शरीर छोड़ने पर यहाँ के प्रसिद्ध स्थान अमर आश्रम में एक पब्लिक प्रोग्राम तथा ब्रह्मा भोजन रखा गया जिसमें पंजाब, हिमाचल तथा हरियाणा से लगभग ३५० भाई-बहनों तथा लगभग ५० विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया जिसमें पटियाला के सबसे बड़े उद्योगपति सेठ चिरंजी लाल जी भी उपस्थित थे।

गोवा सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहाँ ब्राजील से हैंनरी भाई तथा कनाडा से रमेश भाई के पधारने पर कई विशिष्ट व्यक्तियों के निवास स्थान पर जाकर सेवा की गई, जिनमें चीफ मिनिस्टर तथा रेडियो स्टेशन डायरेक्टर भी शामिल हैं।

भावनगर सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि अमरीका से चन्द्रु बहन के आने पर गढ़ड़ा में तथा बगसरा (अमरेली) में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिनसे काफी आत्माओं ने लाभ उठाया। महुआ में विशेष व्यक्तियों का स्नेह मिलन किया गया। इसके अतिरिक्त कई अन्य स्थानों पर भी चन्द्रु बहिन के प्रवचन हुए।

अमरेली सेवा केन्द्र की ओर से सेनानी बोर्डिग में तथा चक्करगढ़ में प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसके अतिरिक्त 'अस्पृश्यता निवारण शिविर' के अवसर पर प्रदर्शनी, प्रवचन तथा सप्ताह कोर्स का कार्यक्रम रखा गया जो कि बहुत सफल रहा।

पहाड़गंज (दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से हंसालय होटल में रोटरी कल्ब की सभा में 'राजयोग' विषय पर प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया जिसमें ४० से भी अधिक प्रतिष्ठित भाई-बहिनों ने भाग लिया। सिडनी से आए हुए भ्राता चारली हॉग का भी प्रवचन हुआ।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक बी 9/19 कृष्णनगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा संगम प्रिंटिंग सर्विस कं० शाहदरा दिल्ली-32 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70